पंजीयन संख्या : 68939/98

ज्ञान तत्व

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

SEP 2025

अंक - 18

480

जे एन यू संस्कृति और भारत

3

नयी समाज व्यवस्था-

6

4 नई सामाजिक चेतना: अच्छे लोगों का साझा मंच :

प्रकाशन की तिथि - 30-09-2025   पोस्ट की तिथि - 16-10-2025

सिंहावलोकन

10 **नेहरू परिवार की विरासत और मोदी काल की दिशा -**

12 **गांधी विचार की मुक्ति: लोक स्वराज के नव जागरण की दिशा**

14 **संकट के तीन रास्ते: भारतीय मुसलमान का वर्तमान और भविष्य**

15 **ज़ूम कार्यक्रम का सारांश**

साथियों की कलम से -

16 **क्या बेशर्म होना ही बुद्धिजीवी होने की पहचान है?**

19 **संस्थागत समाचार**

पत्र व्यवहार का पता

बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बाक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021

website : margdarshak.info

प्रकाशक, संपादक व स्वामी - बजरंगलाल

9617079344

mail : Support@margdarshak.info

मुख्य कार्यालय-
ज्ञानयज्ञ परिवार आश्रम
रामानुजगंज छत्तीसगढ़ 497220
8318621282, 9630766001

लोक स्वराज अभियान
505 कृष्णा शिप्रा अजूरा अपार्टमेंट कौशांबी
गाजियाबाद 201012
9325683604, 9012432074

प्रधान संपादक
बजरंग लाल अग्रवाल
(बजरंग मुनि)

संपादक मण्डल
नरेन्द्र सिंह
विपिन तिवारी
विपुल आदर्श

सहयोगी संपादक
ज्ञानेन्द्र आर्य

सदस्यता नियमन
संजय गुप्ता 872669477
कुशल दुबे 7999934238

सज्जा
लाल बाबू रवि

वितरण एवं मुद्रण सहयोग
रबीन्द्र विश्वास

जे एन यू संस्कृति और भारत

बजरंग मुनि
प्रधान संपादक

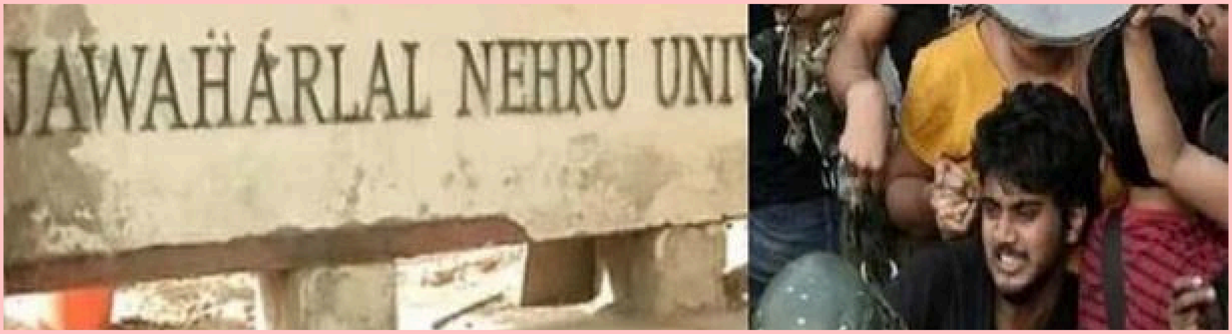

भारत में स्वतंत्रता के समय से ही दो विचारधाराएँ एक दूसरे के विपरीत प्रतिस्पर्धा कर रही थीं — (1) गॉंधी विचार, (2) नेहरू विचार। गॉंधी विचारधारा आर्य संस्कारों से प्रभावित थी, जिसे अब वैदिक, सनातन हिन्दू या भारतीय संस्कृति भी कहते हैं। नेहरू विचारधारा में आर्य संस्कारों को छोड़कर पाश्चात्य, इस्लामिक, साम्यवादी तथा अन्य सबका मिला-जुला समावेश था। इसमें सर्वाधिक प्रभाव समाजवादी धारा का था। कुछ लोग सावरकर को एक विचारधारा मानते हैं, लेकिन सावरकर सिर्फ मुस्लिम विरोध तक सीमित थे।

तीसरी साम्प्रदायिक विचारधारा का प्रभाव नहीं था क्योंकि विभाजन के बाद मुस्लिम धारा प्रभावहीन हुई। गॉंधी हत्या के बाद संघ विचार भी कटघरे में आ गया। फिर भी संघ परिवार ने हिन्दू शब्द पर अपना अधिकार जमाया, तो साम्यवाद ने समाज शब्द पर, जबकि संघ परिवार तो हिन्दुत्व की दिशा में लगातार सोचता भी रहा, किन्तु साम्यवादियों का समाज शब्द से कभी कोई संबंध नहीं रहा।

गॉंधी विचारधारा का मुख्य तत्व है सामाजिक राजनीति और नेहरू विचारधारा का है राजनैतिक समाज। गांधी मानते थे लोकतांत्रिक संसद और नेहरू मानते थे संसदीय लोकतंत्र। गॉंधी तंत्र को प्रबंधक मानते थे, तो नेहरू तंत्र को संरक्षक। गॉंधी विचारधारा में सत्य, अहिंसा, वर्ग समन्वय, हिन्दुत्व, व्यक्ति स्वतंत्रता, सहजीवन, अधिकारों का अकेन्द्रियकरण, कर्तव्य प्रधानता, श्रम सम्मान, नैतिकता, संस्थागत चरित्र, सत्ता का अकेन्द्रियकरण आदि गुण माने जाते हैं।

दूसरी ओर नेहरू विचारधारा में चालाकी, बल प्रयोग, वर्ग निर्माण और वर्ग विद्वेष, उच्च श्रेणीकरण, अल्पसंख्यक प्रोत्साहन, सुषासन, कूटनीति, अधिकार प्रधानता, संगठन शक्ति, बुद्धिजीवी महत्व आदि शामिल रहे। वैचारिक धरातल पर बिलकुल विपरीत होते हुए भी दोनों गुट स्वतंत्रता संघर्ष के मामले में एक साथ थे। स्वतंत्रता मिलने का आभास होते ही दोनों विचारधाराओं में टकराव भी शुरू हो गया, जिसमें सभी राजनेता — जिनमें नेहरू, सावरकर, अंबेडकर, जिन्ना आदि — एक साथ थे। इन्होंने माउंटबेटन को अपना केंद्र बनाया।

गांधी हत्या में भले ही प्रत्यक्ष भूमिका किसी की भी हो, किन्तु अप्रत्यक्ष भूमिका तो इस माउंटबेटन केंद्रित चर्चा की भी रही है। गॉंधी की हत्या होते ही नेहरू संस्कृति संपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करने लगी। गॉंधी विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए बनी संस्था सर्वोदय भी नेहरू विचारों से प्रभावित होती चली गई, क्योंकि सर्वोदय परिवार में संस्कारित और चरित्रवान लोगों का बाहुल्य रहा है। ये लोग चालाकी को न समझ कर संघ विचार को ही हिन्दू संस्कृति मानने लगे और सर्वोदय गॉंधी के अभाव में नेहरू की ओर झुकता चला गया।

पंडित नेहरू अपने को समाजवादी कहते रहे, किन्तु वास्तव में वे साम्यवादी थे। साम्यवाद को भारत के आम जनता तक पहुँचाने के उद्देश्य से उन्होंने साम्यवाद को सांस्कृतिक धरातल देने की इच्छा व्यक्त की, जिसे उनकी मृत्यु के शीघ्र बाद ही जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के रूप में स्थापित कर दिया गया और धीरे-धीरे उसे भारत की सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी का दर्जा दे दिया।

जे एन यू इस तरह नेहरू की विचारधारा के संवाहक और पोषक के रूप में काम करने लगी। वहाँ से अनेक स्थापित विद्वान निकले, जिनमें से अधिकांश वामपंथी विचारों के संवाहक रहे। दूसरी ओर उसी नेहरू की पारिवारिक सत्ता ने जे एन यू से निकले विद्वानों को देश के महत्वपूर्ण राजनैतिक, सामाजिक और साहित्यिक पदों पर स्थापित करना शुरू कर दिया। इस तरह सत्ता और जे एन यू संस्कृति के तालमेल ने पूरे देश में जे एन यू संस्कृति को एक राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त विचारधारा के रूप में स्थापित कर दिया, जो 50 वर्षों तक निरंतर फलती-फूलती रही।

भारत में हिंसा, चरित्रपतन, वर्ग विद्वेष, अल्पसंख्यक

तुष्टिकरण, सत्ता का केंद्रीकरण, संगठनों का टकराव जैसी समस्याएँ सत्ता और जे एन यू संस्कृति के तालमेल का ही परिणाम रही। इस विचारधारा ने नेहरू की सोच से भी आगे बढ़कर लोक को संरक्षक की जगह शासक, वर्ग विद्वेष की जगह वर्ग संघर्ष, बुद्धिजीवी प्रोत्साहन की जगह श्रम शोषण, अल्पसंख्यक प्रोत्साहन की जगह हिन्दू विरोध, कूटनीति की जगह धूर्तता, बल प्रयोग की जगह हिंसा जैसी बुराइयों को बढ़ाया।

जे एन यू ने कोई ऐसा अवसर नहीं छोड़ा, जिसमें गॉधी विचारधारा को पराजित और अपमानित न किया हो। जे एन यू में खुलेआम नक्सलियों द्वारा भारतीय सैनिकों की हत्या को सम्मानित किया गया। साम्यवाद धर्म को अफीम कहता है और रामकृष्ण, देवी दुर्गा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, किन्तु हिन्दुत्व को अपमानित करने के लिए रावण, कुम्भकरण और महिषासुर का अस्तित्व स्वीकार करता है।

चीन और भारत के टकराव के समय भी जे एन यू की विचारधारा विपरीत ही दिखती है। कश्मीर के मामले में जे एन यू बिल्कुल नग्न स्वरूप में सामने आता है और अल्पसंख्यकों का तो वह प्रमुख वकील बन जाता है। जे एन यू में सबसे पहले बालिग होते ही चरित्रहीनता का प्रशिक्षण दिया जाता है और उन्हें भावना विहीन बनाया जाता है। महिला और पुरुष के बीच की दूरी घटाने के प्रशिक्षण का पूरा नेतृत्व जे एन यू के पास है, किन्तु महिला अधिकार के लिए वर्ग संघर्ष का ताना-बाना भी जे एन यू ही बुनता रहता है।

यदि महिला-पुरुष के बीच दूरी घटने का मामूली सा भी दुष्परिणाम दिखा तो जे एन यू आसमान सर पर उठा लेता है। यदि ठीक से सर्वेक्षण किया जाए तो जे एन यू प्रशिक्षित आंदोलनकारी महिलाएँ अपने व्यक्तिगत जीवन में परंपरागत महिलाओं की तुलना में अधिक परिवार-तोड़क और दुष्चरित्र हो सकती हैं।

जे एन यू से प्रशिक्षण प्राप्त साहित्यकार, कलाकार, लेखक और कवि — आदिवासी, गैर-आदिवासी, सवर्ण, हरिजन, गरीब, अमीर, श्रमजीवी, पूँजीपति, महिला और पुरुष — युवा और वृद्ध के नारे पर एक वर्ग के पक्ष में वातावरण बनाते हैं और उसी संस्कृति के पोषक शासकीय अधिकारी, न्यायाधीश, और नेता उस वातावरण को सर्वाधिक महत्व देकर अनुपालन में कानून बना देते हैं। यह कानून वर्ग संघर्ष का आधार बन जाता है।

मुझे याद है कि गोधरा में हुए रेल अग्निकांड के समय जे एन यू के प्रचार और उनके अधिकारियों के समर्थन से यह असत्य भी सत्य के समान स्थापित हो गया कि रेल डब्बे में आग अंदर से लगाई गई थी, बाहरी भीड़ द्वारा नहीं। कल्पना की जा सकती है कि इतना सफेद झूठ भी सत्य के समान स्थापित कर दिया गया। मोदी के पूर्व तक भारत में जे एन यू संस्कृति का इतना प्रभाव था कि उसे सर्व-सत्ता सम्पन्न तक माना जाता था और भारत में किसी की ऐसी स्थिति नहीं थी कि उनके गलत कार्यों पर प्रश्न उठा सके। सत्ता, संसद, संविधान, साहित्य, कला आदि सब जगह — चाहे पक्ष हो या विपक्ष — सब जगह जे एन यू संस्कृति के समर्थकों का एक छत्र साम्राज्य था।

मोदी जी के आने के बाद जे एन यू संस्कृति को चुनौती मिली। प्रारंभ में तो उस संस्कृति के स्थापित कलाकार, साहित्यकार और राजनेता जे एन यू के छात्रों को आगे करके टकराने का भरपूर प्रयोग किए। किन्तु संघ विचारधारा के सामने आने के बाद वे अब तक सफल नहीं हो सके हैं।

यह सही है कि अब भी जे एन यू संस्कृति के पोषक अनेक लोग न्यायपालिका और कार्यपालिका में बैठकर पूरी ईमानदारी से सत्य को असत्य और असत्य को सत्य सिद्ध करते रहते हैं। ऐसे लोग पूरी तरह ईमानदार होते हैं, किन्तु वे जिस संस्कृति में पले-बढ़े हैं, उस संस्कृति को ही वे श्रेष्ठ मान कर ईमानदारी से अपने कार्य करते रहते हैं।

किन्तु यह भी सच है कि कालांतर में जे एन यू संस्कृति का भारतीय संस्कृति पर एकाधिकार समाप्त हो जाएगा।

मैं मानता हूँ कि जे एन यू संस्कृति का स्थान यदि सावरकरवादी संस्कृति ने ले लिया तो वह भी घातक ही होगा क्योंकि एक नागनाथ और दूसरी सापनाथ है। किन्तु गॉधी की आर्य संस्कृति अभी इस स्थिति में नहीं है कि वह दोनों से एक साथ मुकाबला कर सके।

इसलिए उचित है कि अपनी सुरक्षा के लिए जे एन यू संस्कृति के समक्ष ताल ठोककर खड़ी संघ संस्कृति का पूरा समर्थन किया जाए। वैसे भी जे एन यू संस्कृति की तुलना में संघ संस्कृति बहुत अच्छी है तथा इसे सत्ता में भी वैसा स्थान प्राप्त नहीं है जैसा जे एन यू संस्कृति का पिछली सरकारों के समय रहा।

इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम भारत से जे एन यू संस्कृति के समापन के लिए पूरा प्रयास करें। हमें इतना अवश्य सतर्क रहना चाहिए कि नेहरू संस्कृति के विरुद्ध सावरकरवादी संस्कृति का हम समर्थन-सहयोग भले ही करें, किन्तु उसे अपनी संस्कृति मानने की भूल न करें।

क्योंकि हमारी भारतीय संस्कृति तो वह आर्य संस्कृति है, जिसके अनुपालन में गांधी जी ने अपना सबकुछ लगाया। मेरा अपने मित्रों से निवेदन है कि वे इस संक्रमण काल में सत्य के समान स्थापित असत्य को चुनौती देने का प्रयास करें और ऐसा प्रयास ही जे एन यू संस्कृति और सावरकरवादी संस्कृति से सामूहिक मुकाबला कर सकता है।

प्रश्न 1: आपने गांधी और नेहरू के विचारों के बीच जिस खाई को विस्तार से बताया है वह चौकाने वाली भी है और सत्य भी है। दूसरी ओर यह भी सत्य है कि गांधी जी पंडित नेहरू के विषय में सब कुछ जानते हुए भी उन्हें सबसे ज्यादा महत्व देते थे। इन दोनों विरोधाभासों का राज क्या है, यह बताने की कृपा करें।

उत्तर: मैं जानता हूँ कि दोनों ही बातें सच हैं और गांधी भी गलत नहीं थे। योजना बनाने में चरित्र का कम और नीतियों का अधिक महत्व होता है, जबकि कार्यान्वयन में नीतियों का कम और चरित्र का अधिक महत्व होता है। गांधी के साथ काम करने वाले जो लोग उच्च चरित्रवान थे, वे निरंतर सत्ता से दूर रहना चाहते थे।

गांधी की मजबूरी थी कि वे नेहरू, पटेल और अंबेडकर में से ही एक का चयन करें। इन तीनों में पटेल अधिक चरित्रवान थे। अंबेडकर तो किसी लायक थे ही नहीं। नेहरू नीतियों के मामले में पटेल से अधिक अच्छे थे, क्योंकि नेहरू बालिग मताधिकार के पक्षधर थे और पटेल सीमित मताधिकार के। गांधी तो बालिग मताधिकार से भी ऊपर जाकर लोकस्वराज्य के पक्षधर रहे।

दूसरी ओर पटेल, नेहरू की अपेक्षा अधिक उग्र राष्ट्रवादी थे, जो गांधी को पसंद नहीं थे। पटेल संघ की विचारधारा से भी कुछ ज्यादा ही नजदीक थे और संघ सावरकरवादियों के साथ मिलकर काम कर रहा था । उस समय भारत गुलाम था और लॉर्ड माउंट बेटन की भी इच्छाओं का ध्यान रखना था । ऐसी परिस्थिति में गांधी के सामने नेहरू के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं था। यदि गांधी की जगह मैं भी रहा होता तो मेरे सामने भी कोई अन्य विकल्प नहीं होता।

यह बात भी स्पष्ट है कि गांधी सत्ता की अपेक्षा समाज व्यवस्था को अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि जब सत्ता के पास बहुत कम अधिकार होंगे तो नेहरू वहां कुछ ज्यादा फेर-बदल नहीं कर पाएंगे और नियंत्रण के लिए गांधी जी स्वयं थे ही। गांधी हत्या के बाद जो परिस्थितियां नेहरू और अंबेडकर ने बनाई, उसकी गांधी को कोई कल्पना नहीं थी। ऐसी परिस्थिति में गांधी इसके अतिरिक्त और क्या कर सकते थे। मैं समझता हूँ कि गांधी ने जो किया वह उस समय की परिस्थितियों के अनुसार पूरी तरह ठीक था।

प्रश्न 2: आजकल गांधी खादी और चरखा की विशेष चर्चा हो रही है। इस संबंध में आपका क्या विचार है?

उत्तर: मैंने एक बार देखा कि रामलीला में राम और रावण के बीच घनघोर युद्ध हुआ और रावण के मरने के बाद दर्शकों ने राम को बहुत उपहार दिए। घर जाने के बाद राम और रावण ने सारे उपहार आधे-आधे बाँट लिए क्योंकि दोनों सगे भाई थे।

गांधी के समय दो विचारधाराएँ भारत में काम कर रही थीं। एक विचारधारा ने गांधी के शरीर की हत्या कर दी और दूसरी ने उनके विचारों की। दोनों विचारधाराएँ खादी और चरखे के नाम पर आज भी गांधी के नाम का उपयोग करने की छीना-झपटी में लगी हुई हैं, जबकि गांधी से दोनों का कोई मतलब नहीं।

मैंने टीवी की बहस में गांधीवादियों को कहते सुना कि खादी एक विचार है और वर्तमान खादी उस विचार की हत्या रही है। मैं आज तक नहीं समझा कि यदि खादी गांधी का सर्वोत्तम विचार है तो ग्राम स्वराज्य, मशीन और श्रम का संतुलन, वर्ग समन्वय क्या है? आजकल कोई गांधीवादी कभी श्रम और मशीन का संबंध, वर्ग समन्वय अथवा ग्राम संसद के लिए कभी आंदोलन नहीं करता, बल्कि मैं आम तौर पर देखता हूँ कि सर्वोदय के लोग कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि का विरोध करते हैं। कुछ महीने पहले ही विजय शंकर जी शुक्ल के नेतृत्व में ग्राम सभा सशक्तिकरण की योजना बनाई गयी थी लेकिन उनकी मृत्यु होते ही वह योजना भी धीरे धीरे कमजोर हो रही है ।

गांधीवादी ग्राम संसद की जगह आदर्श ग्राम की बात करते हैं। उनका हर कार्य वर्ग सशक्तिकरण के साथ जुड़ा होता है और बात करेंगे खादी-चरखा और गांधी की, जैसे कि गांधी पर उनका अकेले का पेटेंट हो गया हो। नरेंद्र मोदी को भी अब तक गांधी से कोई मतलब नहीं है क्योंकि वे अभी तक नक्सलवाद सांप्रदायिकता तथा आर्थिक स्थिति सुधारने तक सीमित हैं । मोदी जी न तो कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि की चर्चा करते हैं, न ही कभी ग्राम संसद या लोकस्वराज्य की।लेकिन परिस्थितियों में कुछ बदलाव आते ही उनसे पहल की उम्मीद की जा सकती है ।

प्रश्न – क्या अब भी बचे हुए गांधीवादियों से कोई उम्मीद की जा सकती है ?

उत्तर- स्वशासन की जगह सुषासन उनका प्रिय नारा है। वर्ग समन्वय की जगह महिला, आदिवासी, हरिजन, गरीब सशक्तिकरण को उन्होंने आधार बना रखा है और दिन-रात गांधी के नाम की माला जपते हैं।

मैंने सुना है कि कबीर दास के मरने के बाद उनकी लाश का बटवारा कैसे हो, इस पर भी विवाद रहा। वह स्थिति आज गांधी के नाम की हो रही है।

सिद्धांत है कि मृत महापुरुषों के विचार बिना स्वयं विचार किए आंख मूंदकर स्वीकार करना हमेशा घातक होता है। इसका अर्थ हुआ कि गांधी के विचारों की वर्तमान देश-काल परिस्थिति अनुसार समीक्षा और संशोधन करके ही स्वीकार करना चाहिए। यह तो इस्लामिक मान्यता है कि किसी महापुरुष का कथन अंतिम सत्य है। मैं चाहता हूँ कि उपरोक्त इस्लामिक धारणा में वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार संशोधन करने पर विचार के द्वार खुलें। गांधी ने आंख मूंदकर महापुरुषों का अनुकरण नहीं किया, और देश-काल परिस्थिति अनुसार नए मार्ग बताए।

आज गांधी की वास्तविक मान्यता यही होगी कि अब आज की परिस्थिति अनुसार वर्तमान समस्याओं के समाधान खोजने का प्रयास होना चाहिए

माँ संस्थान के नेतृत्व में हम ऐसा प्रयत्न लगातार कर रहे हैं । हमारे सामने यह संकट हैं की अब कुछ कट्टर कम्यूनिस्ट ही गांधीवाद की माला जप रहे हैं लेकिन हम जिस लोक स्वराज्य की बात कर रहें हैं वह गांधीवादी ही अधिक आसानी से समझ सकता है । दूसरी बात ये हैं की गांधीवादी चरित्रवान और अधिक ईमानदार होते हैं । वे समाज सेवा को व्यापार नहीं बनाते । इसलिए गाँधीवादियों पर हम अधिक मेहनत कर रहे हैं क्योंकि हमारा लक्ष्य है लोक स्वराज्य और मार्ग है वैचारिक संतुलनवादी हिन्दुत्व । ऐसी परिस्थितियों में यदि आप कोई और सुझाव दे सके तो हमे सुविधा होगी ।

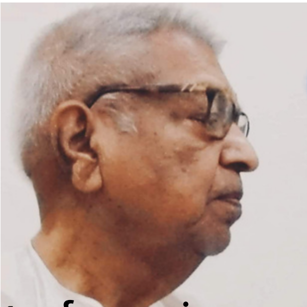

विविध विषयों पर मुनि जी के लेख

1 धर्म बनाम संगठन: सभ्यता की चुनौती:

समाज धर्म और राज्य दोनों के माध्यम से चलता है समाज सबसे ऊपर होता है धर्म समाज का मार्गदर्शन करता है और राज्य उसे सुरक्षा देता है इस तरह धर्म और राज्य समाज के नीचे होते हैं लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब धर्म और राज्य अपने को समाज से ऊपर घोषित करने लगते हैं। धर्म जब भी संगठन बनता है तब धर्म का स्वरूप विकृत होता है। वर्तमान दुनिया में भी जितने अपराध और जितनी हत्याएं धर्म के नाम पर हुई है उतनी अन्य किसी आधार पर नहीं हुई है। यह कोई साधारण बात नहीं है दुनिया जानती है। इसलिए हम आप सबका कर्तव्य है धर्म को धर्म ही रहने दो उसे संगठन मत बनाओ। हमारे अनेक तथा कथित धर्म गुरु धर्म को हिंदू संगठन बनाने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि दूसरी ओर मुसलमान का भी एक विश्व व्यापी संगठन बना हुआ है। हमारे धर्म गुरु कभी अकल से काम नहीं लेना चाहते । मुसलमान के संगठन का मुकाबला करने के लिए हिंदुओं को संगठित करना चाहते हैं। मैं सोचता हूं कि अभी दुनिया में ऐसी परिस्थितियों नहीं आई है कि इस्लाम का मुकाबला करने के लिए हिंदुओं को एकजुट किया जाए बल्कि मुझे यह बात अच्छी लगती है कि इस्लाम का मुकाबला करने के लिए सारी दुनिया को एकजुट किया जाए अर्थात पूरा समाज मिलकर इस्लाम का मुकाबला करें।

2 सच्चा समाज वही, जहाँ अच्छाई और बुराई ही मापदंड हों :

समाज में जातियों के नाम पर सिर्फ दो ही जातियां बनाई जा सकती हैं एक होगी उन लोगों की जो सामाजिक नियमों के अनुसार कार्य करते हैं और दूसरी होगी उन लोगों की जो सामाजिक नियमों के विपरीत कार्य करते हैं इस तरह शरीफ और बदमाश दो ही गुट बन सकते हैं हर परिवार में हर गांव में हर धर्म में हर समूह में सभी जगह दोनों प्रकार के लोग हो सकते हैं इस तरह समाज में दो ही संगठन बनने चाहिए अन्य प्रकार के जो संगठन बनाए जाते हैं यह अपराधियों को छिपाने के लिए बनाए जाते हैं इस अलग तरह की गुटबंदी से हिंदू मुसलमान आदिवासी गैर आदिवासी ब्राह्मण राजपूत इस प्रकार के जातीय समूह बनने से यह बदमाश लोग ऐसे गुटों में जाकर शामिल हो जाते हैं और अपनी पहचान बदल लेते हैं। मेरा आपसे निवेदन है की समाज में अच्छे और बुरे दो प्रकार के ही वर्ग बनने एक तीसरा वर्ग बीच में हो सकता है कि जो कुछ अच्छा हो कुछ बुरा हो ऐसा बीच का एक वर्ग हो सकता है लेकिन वर्ग दो ही बनने चाहिए अच्छे और बुरे इन्हें पुराने जमाने में देवा सुर संग्राम कहा जाता था।

3 नई समाज व्यवस्था की ओर: सामाजिक, असामाजिक और समाज विरोधी :

हम एक नई समाज व्यवस्था का सपना देख रहे हैं हम चाहते हैं कि हमारा सपना हमारी नींद खुलने पर साकार दिखे । इस सपने में हमने यह सोचा है। अब समाज में अच्छे और बुरे दो प्रकार के लोग नहीं बल्कि तीन प्रकार के लोग माने जाएं एक सामाजिक एक असामाजिक और एक समाज विरोधी। सामाजिक व्यक्ति माना जाए जो दूसरों की मदद करता है अ सामाजिक वह माना जाए जो किसी की मदद नहीं करता लेकिन कोई अपराध भी नहीं करता और समाज विरोधी उसे मान जाए जो अपराध करता है । इसका मतलब यह है की वर्तमान दुनिया में एक नए बदलाव की जरूरत है। गीता में भी यही समझाया गया है और मैं भी यही समझ रहा हूं कि हम सामाजिक असामाजिक और समाज विरोधी तीन भाग करें। जो व्यक्ति सामाजिक है उसको हम भरपूर सम्मान दें क्योंकि वह सेवा कार्य कर रहा है जो व्यक्ति असामाजिक है उसे हम समझाएं लेकिन बहिष्कार ना करें विरोध ना करें उसको साथ लेकर चले यही वास्तव में धर्म की जिम्मेदारी है कि वह अ सामाजिक लोगों को धीरे-धीरे हृदय परिवर्तन करें जो व्यक्ति सामाजिक भी नहीं है और असामाजिक भी नहीं है बल्कि अपराधी है वह समाज की बात नहीं समझता वह धर्म की बात भी नहीं समझता ऐसे लोगों को समाज बहिष्कार भी करें और ऐसे लोगों को राज्य दंडित भी करें । कुल मिलाकर वर्तमान भारत में ऐसे समाज विरोधी तत्वों की सिर्फ संख्या दो प्रतिशत है लेकिन हमारे गलत कानून ने अ सामाजिक लोगों को भी अपराधियों के साथ जोड़ दिया है और इसलिए उनकी संख्या 98 तक दिखती है यह हमारी गलती है और हमें यह गलती तत्काल सुधार लेनी चाहिए।

4 नई सामाजिक चेतना: अच्छे लोगों का साझा मंच :

हम नई समाज व्यवस्था पर चर्चा कर रहे हैं । नई समाज व्यवस्था में सभी अच्छे लोगों को एकजुट करने का प्रयास किया जाएगा और यह प्रयास हम लोगों ने प्रारंभ भी भी कर दिया है । मैं जानता हूं कि दुनिया के सभी लोगों को एकजुट करना संभव नहीं है लेकिन सभी अच्छे लोगों को एकजुट होना चाहिए और बुरे लोग भी

अच्छे बने इस दिशा में प्रयास भी होना चाहिए। इसी कड़ी में हम लोगों ने पिछले 30 वर्ष से परिश्रम करके अच्छे लोगों को एकजुट करना शुरू किया। हमारा यह मानना है कि गांधीवादियों और संघ दोनों समूहों में अच्छे लोग बहुत अधिक हैं लेकिन इन अच्छे लोगों की एक जुटता में साम्यवादी बाधक हैं। साम्यवाद एकमात्र ऐसी विचारधारा है जो वर्ग संघर्ष पर अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है। वह समाज में विभाजन की पक्षधर है इसलिए हमें साम्यवाद से पूरी तरह बचना चाहिए। दुर्भाग्य से सावरकर वादियों ने ना समझी से साम्यवाद से टकराव का मार्ग चुना जो ना उनकी योग्यता थी और ना क्षमता। इसका दुष्परिणाम हुआ की समाज में अच्छे लोग एकजुट नहीं हो सके। अब हमारा यह प्रयत्न है कि हम सभी गांधीवादियों और संघ के लोगों को जल्दी से जल्दी एकजुट कर दे। मैं अब भी देखता हूं की गांधीवादियों में बड़ी संख्या में अच्छे लोग हैं जो चर्चाओं के माध्यम से संघ के अच्छे लोगों के साथ जुड़ सकते हैं हम इस दिशा में पूरी तरह प्रयत्नशील है। दूसरी तरफ हम यह भी अनुभव कर रहे हैं कि सावरकर वादियों में बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो संघ के साथ जुड़ सकते हैं इस तरह हमारा वैचारिक धरातल पर संघ और गांधी वाद का एकीकरण करके भौतिक धरातल पर भी हम एकीकरण चाहते हैं। मेरा गांधीवादियों से विशेष निवेदन है कि वे एक बार इस बात का गहराई से अध्ययन करें कि क्या संघ गांधी मार्ग पर चल रहा है और यदि चल रहा है तो फिर संघ के साथ जुड़ने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि संघ गांधी मार्ग पर चल रहा है । मैं यह भी जानता हूं कि यह बात सावरकर वादियों को पसंद नहीं है लेकिन संघ अपने मार्ग पर चल रहा है । मैं यह नहीं कह रहा कि संघ में विलय कर जाएं लेकिन मैं यह जरूर चाहता हूं कि गांधीवादी साम्यवाद से दूर हो जाए और संघ के अच्छे कार्यों का समर्थन करें गलत कार्यों में सलाह दें। संघ सावरकर वादियों से दूर होने का निरंतर प्रयास कर रहा है।

5 तीस वर्षों की यात्रा: संघ और गांधीवाद का एकीकरण :

मैंने जीवन में सिर्फ एक दिशा में कार्य किया कि मैं लगातार इस समस्या पर विचार करता रहा कि भारत में संघ और सर्वोदय अर्थात गांधीवादी इन दोनों संस्थानों में बहुत ही अच्छे लोग हैं ईमानदार और त्यागी है लेकिन दोनों एक दूसरे के विरुद्ध लड़ते हैं क्योंकि दोनों मिलकर कभी बात नहीं करते। संघ पर सावरकर वाडियो का प्रभाव है और गांधीवादियों पर साम्यवादियों का। यह दोनों ही दुकानदार हैं और दोनों नहीं चाहते कि गांधीवादी और संघ के लोग एक साथ बैठकर विचार करें मैं 33 वर्ष पहले यह प्रयत्न शुरू किया। कई उतार चढ़ाव आए हमेशा सावरकर वादियो और साम्यवादियों ने हमारी योजनाओं का विरोध किया लेकिन हम लगातार अपनी दिशा में आगे बढ़ते रहे। हम लगातार संघ और गांधीवादियों को एक साथ बैठाकर लोक स्वराज की दिशा समझाते रहे लेकिन हम यह भी समझते थे कि लोक स्वराज के कार्य के लिए सभी अच्छे लोगों को एकजुट होना चाहिए गांधीवादी और संघ का अंतर समाप्त होना चाहिए । मुझे खुशी है कि मेरी बात को अच्छी तरह समझा गया। 2009 तक सर्वोदय ने लोकस्वराज्य का नेतृत्व किया और सर्वोदय के लोग हमेशा संघ के लोगों के साथ मिलकर लोक स्वराज को आगे बढ़ाना चाहते थे लेकिन 2009 के बाद अन्ना हजारे के आंदोलन ने सर्वोदय के लोगों को अपने साथ जोड़ लिया और इस तरह हमारी लाइन बदल गई हम लोगों ने अपना प्रयास जारी रखा। 2017 में संघ के लोगों ने लोक स्वराज पर सहमति दिखाई नरेंद्र मोदी मोहन भागवत तथा कुछ अन्य प्रमुख लोगों ने मिलकर यह घोषणा की कि अब वैचारिक संतुलनवाड़ी हिंदुत्व ही हमारा मार्ग होगा। 2017 के बाद अब लगातार भारत संघ के नेतृत्व में वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व की दिशा में आगे बढ़ रहा है । आज भी सावरकर वादी लगातार हमारी योजना के खिलाफ छाती पीट रहे हैं घरों में घुसकर चिल्ला रहे हैं लेकिन उनके पास कोई मार्ग नहीं है कोई उनकी सुनने वाला नहीं है दूसरी ओर सर्वोदय में घुसे कम्युनिस्ट भी अलग-थलग पड़ गए हैं ऐसी स्थिति में मेरा निवेदन है कि अब गांधीवाद और सावरकर वाद के नाम पर दुकानदारी छोड़ देनी चाहिए और अब बच्चे खुचे साम्यवादियों और सावरकर वाडियो को भी नरेंद्र मोदी मोहन भागवत का वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व का मार्ग स्वीकार कर लेना चाहिए। मैं अंतिम समय तक अपने प्रयास जारी रखूंगा कि सावरकर वादी और साम्यवादी दोनों जनहित में नरेंद्र मोदी मोहन भागवत के नेतृत्व को स्वीकार करें और नरेंद्र मोदी मोहन भागवत लगातार वैचारिक संतुलनवाड़ी हिंदुत्व की दिशा में आगे बढ़ते रहे। मैं अपने सभी साथियों से निवेदन करता हूं कि हमारी एक ही दिशा होगी वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व। हम इसी मार्ग से चलकर लोक स्वराज को प्राप्त करेंगे। हमारा लक्ष्य है लोक स्वराज और उसका मार्ग है वैचारिक।

6 कन्या पूजन और ब्राह्मण सम्मान: धर्म नहीं, सामाजिक व्यवस्था:

कल दशहरा था परसों नवमी थी दोनों दिनों में मैंने देखा कि मेरे परिवार के लोगों ने 11 कन्याओं की पूजा की उन्हें भोजन भी कराया साथ ही ब्राह्मणों को भी उचित सम्मान दिया उन्हें दान भी दिया। हम इस बात को जानते हैं की वैचारिक धरातल पर दोनों प्रथाओं का कोई उपयोग नहीं है लेकिन मान्यताएं चली आ रही हैं इसलिए मैंने इस पर गंभीरता से सोचा कि यह

मान्यताएं धार्मिक है या सामाजिक। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यह कन्या पूजन दशहरा ब्राह्मणों का सम्मान यह सामाजिक व्यवस्था रही है धार्मिक नहीं । यह अलग बात है कि इसे धार्मिक बनाकर कुछ भावनात्मक तरीके से जोड़ा गया लेकिन है यह सामाजिक व्यवस्था। आप गंभीरता से सोचिए की हमने ब्राह्मणों को सर्वोच्च सम्मान दिया है और ब्राह्मणों को किसी तरह का व्यापार करने से रोक लगा दी है उनका भरण पोषण समाज को करना चाहिए और उस भरण पोषण का ही तरीका बनाया गया है कि लोग अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार इस प्रकार के ब्राह्मणों को मदद करें। मैं समझता हूं कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है । यह बात जरूर गलत है कि पहले ब्राह्मण योग्यता के अनुसार बनते थे अब जन्म के अनुसार बन गए यह गलती समाज की नहीं है यह गलती सिर्फ ब्राह्मणों की है और ब्राह्मणों को यह गलती सुधारनी चाहिए। हम लोग इस गलती को सुधार रहे हैं कोई ब्राह्मण इस सुधार में विरोध नहीं कर रहा है बल्कि मदद कर रहा है लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं हूं की ब्राह्मणों को यदि समाज सम्मान दे रहा है तो इस प्रथा को ही रोक दिया जाए। जहां गलती है उस गलती को सुधारा जाए ना की उस गलती को सुधारने की अपेक्षा उस व्यवस्था में हीं तोड़फोड़ कर दी जाए। यदि एक बार समाज के अंदर ब्राह्मणों के प्रति दुर्भाव पैदा हो गया तो वह लंबे समय तक नुकसान करेगा। संघ आर्य समाज गायत्री परिवार हम लोगों का संस्थान तथा कुछ अन्य लोग भी ब्राह्मण निर्माण की व्यवस्था में बदलाव कर रहे हैं लेकिन हम इस बात से सहमत नहीं है की ब्राह्मणों के सम्मान को समाप्त कर दिया जाए जन्म के अनुसार ब्राह्मण नहीं कर्म से ब्राह्मण बने हम इस प्रथा को विस्तार देंगे लेकिन हम जन्म के अनुसार ब्राह्मण की प्रथा का विरोध नहीं करेंगे समाज में टकराव नहीं तालमेल होना चाहिए।

7 नए वर्ण व्यवस्था की ओर: कर्म और योग्यता का पुनर्निर्माण:

मैंने वर्ण व्यवस्था में आई विकृतियों में ब्राह्मणों की भूमिका पर एक पोस्ट लिखी थी इस संबंध में संतोष मां खड़िया जी और अभ्युदय द्विवेदी जी ने कुछ टिप्पणी की है पोस्ट गंभीर थी इसलिए अधिकांश लोगों ने तो पढ़ना ही उचित नहीं समझा। इस संबंध में मैं अपनी बात साफ कर देना चाहता हूं। मेरे विचार में वर्ण व्यवस्था में जो भी विकृति आई है उसके लिए ब्राह्मण वर्ग दोषी नहीं है किसी ने जानबूझकर ऐसा नहीं किया है बल्कि धीरे-धीरे लापरवाही हुई है । बहुत पुराने जमाने में परीक्षा के द्वारा ही ब्राह्मण बनते थे और किसी आधार पर नहीं किंतु कालांतर में सभी ब्राह्मण ऐसी परीक्षाएं पास करने लगे और इसलिए धीरे-धीरे परीक्षा औपचारिक हो गई और आमतौर पर ब्राह्मण पुत्रों को ब्राह्मण माना जाने लगा। यही प्रथा आगे चलकर जन्म के अनुसार ब्राह्मण बनाने लग गई और धीरे-धीरे आगे चलकर इसी आधार पर छत्रिय वैश्य भी बनने लगे। हो सकता है कि पहले शुद्र इस आधार पर बने हो मैं नहीं कह सकता की कहां से यह बुराई आई लेकिन आई जरूर और इस बुराई का यह परिणाम हुआ अयोग्य लोग ब्राह्मण बनने लगे योग्य लोग ब्राह्मण से बाहर रहने लग गए। इस बीमारी का इलाज आर्य समाज गांधी गायत्री परिवार और संघ ने शुरू किया लेकिन राजनीति में और विशेष कर अंबेडकर नेहरू आदि ने जन्मना जाति को मान्यता देकर इस संघ गांधी गायत्री परिवार आर्य समाज आदि के प्रयत्नों की हवा निकाल दी । परिणाम हुआ की स्वतंत्रता के बाद जन्मना जाति की व्यवस्था अधिक मजबूत होती चली गई मैंने देखा है की एक जमाने में हरिजन अपने को ब्राह्मण कहे जाने से गौरवान्वितअनुभव करता था और स्वतंत्रता के बाद अब कोई ब्राह्मण भी हरिजन बनने को तैयार है क्योंकि जन्मना जाति को बहुत अधिक महत्वपूर्ण बना दिया गया अब इसका समाधान का एक तरीका है सकारात्मक एक है नकारात्मक। नकारात्मक तरीके का अर्थ यह है कि हम वर्तमान विकृत वर्ण व्यवस्था की बुराइयों को समाज में बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करें और समाज इस बुराई का समाधान खोजें दूसरी सकारात्मक दिशा है कि हम इसकी बुराइयों की कोई चर्चा ना करें और हम एक नई परीक्षा प्रणाली बनाकर नए तरह की वर्ण व्यवस्था को आगे बढ़ाने का प्रयास करें मेरे विचार से वर्तमान परिस्थितियों में दूसरा मार्ग अच्छा होगा।

8 न्याय पंचायत: आत्मनिर्भर और उत्तरदायी न्याय प्रणाली:

वर्तमान व्यवस्था में न्यायपालिका एक बोझ बनी हुई है । गलती किसकी है वह अलग से सोचेंगे लेकिन यह बात सिद्ध हो गई है कि न्यायपालिका न्याय देने में असफल है । न्याय प्रणाली बहुत अधिक महंगी है समय बहुत लगता है न्याय होता ही नहीं है और अनेक प्रकार की कमियां है जिनके कारण न्याय प्रणाली अ विश्वसनीय हो गई है उसमें आमूल चूल बदलाव करने की आवश्यकता है । हम लोगों ने नई न्याय व्यवस्था बनाई है इसके अनुसार न्याय के लिए कुछ अलग मार्ग भी खोजे गए हैं। वर्तमान केंद्रित न्याय की जगह विकेंद्रित न्याय प्रणाली को हम मान्यता देते हैं। इसके अनुसार हर पंचायत में न्याय पंचायत बनाई जाएगी । न्याय पंचायत का पूरा खर्चा न्याय पंचायत पर होगा और वह खर्चा न्याय पंचायत न्याय प्रणाली से ही पूरा करेगी अर्थात न्याय पंचायत का न्याय महंगा होगा। जो अपराधी होगा उस पर कड़े आर्थिक दंड लगाए जाएंगे। न्याय पंचायत के साथ-साथ पंचायती न्याय की व्यवस्था भी चलती रहेगी न्याय पंचायत महंगी होने के कारण कुछ लोग पंचायती न्याय से भी मामले निपटा सकते हैं। इस तरह न्याय

तत्काल होगा स्थानीय स्तर से होगा और सरकार पर बोझ नहीं बनेगा। अनेक मामले तो पंचायती न्याय या न्याय पंचायत निपटा लेंगे कुछ थोड़े से मामले ही सरकार के पास जाएंगे और सरकारी अदालतों का बोझ बहुत कम हो जाएगा।

9 नियमन से स्वतंत्रता तक: सत्ता के अकेंद्रीकरण की दिशा में:

पूरी दुनिया में यह बात सिद्ध होती जा रही है कि किसी भी व्यवस्था में नियम कानून जितने अधिक होंगे उस व्यवस्था में आम लोग अयोग्य रह जाते हैं चाहे परिवार हो या गांव हो या देश हो कोई भी क्यों ना हो नियम कानून की अधिकता उसका पालन करने वाले व्यक्तियों के सोचने समझने और निर्णय करने की शक्ति घटा देती है। यह बहुत बड़ी क्षति मानी जाती है । जहां भी तानाशाही होती है वहां तेज विकास होता है यह बात सही है लेकिन इसका दुष्परिणाम भी होता है कि उस तानाशाही के समाप्त होते ही पूरी तरह अराजकता हो जाती है क्योंकि अन्य सब लोगों की योग्यता अविकसित हो जाती है इसलिए हमें सत्ता के केंद्रीय करण का मार्ग छोड़ देना चाहिए । केंद्रीय करण कामार्ग दीर्घकालिक नहीं है । इसका मतलब यह हुआ कि कानून को कम से कम किया जाना चाहिए। कानून जितने कम होंगे उतना ही समाज के आम लोगों में परिस्थिति अनुसार निर्णय करने की क्षमता बढ़ेगी। वर्तमान भारत सरकार कानून को कम करने की दिशा में प्रयत्नशील है । सिद्धांत रूप से तो उसने मान लिया है भले ही अभी व्यावहारिक धरातल पर कुछ दिखा नहीं है। लेकिन हम चाहते हैं कि हमारी भारत सरकार और अधिक तेज गति से कानून को समाप्त करें । इसी तरह हम चाहते हैं कि हम अपने पारिवारिक व्यवस्था में भी नियम कानून को कम करें परिवार के अन्य सदस्यों को कुछ मामलों में निर्णय करने की स्वतंत्रता दें। मैंने अपने जीवन में 50 वर्षों तक केंद्रीय करण का प्रयोग किया था और बाद के 30 वर्षों तक अकेंद्रीय करण का प्रयोग किया। मेरा यह अनुभव है की सत्ता के केंद्रीकरण की तुलना में सत्ता का अकेंद्र करण अधिक दीर्घकालिक समाधान है भले ही तात्कालिक नुकसान होता हो।

10 चुनाव आयोग का गौरव: शेषन और ज्ञानेश कुमार:

हमने 30 वर्ष पहले शेषन को चुनाव आयुक्त के रूप में देखा था। हमें आश्चर्य हुआ था की कोई चुनाव आयुक्त इतना निष्पक्ष इतना ईमानदार इतना भय मुक्त भी हो सकता है। चुनाव आयुक्त ने किसी भी प्रकार से भय मुक्त होकर कार्य किया था उसके बाद अभी हमने ज्ञानेश कुमार को देखा है ज्ञानेश कुमार भी लगभग उसी दिशा में जा रहे हैं। इन्होंने बहुत हिम्मत दिखाई है। इन्होंने विपक्ष के नेता न्यायालय तथा अन्य अनेक तरह के दबाव को झेला है

लेकिन सारे दबावों को किनारे करते हुए अभी तक ज्ञानेश कुमार सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। इन्होंने तय किया है कि अगला चुनाव ईमानदारी से ही होगा। इन्होंने तय किया है कि मतदाता सूची सही होगी विदेशियों के नाम काटे जाएंगे। वैसे एक बार ऐसा लगने लगा था कि वह व्यक्तिगत आरोपों से भयभीत है लेकिन फिर उन्होंने हिम्मत दिखाई और हिम्मत दिखाकर उन्होंने सारे दबाव झेल लिए । हमें इस प्रकार के चुनाव आयुक्तों पर गर्व है। अब हम भविष्य में सिर्फ चुनाव आयुक्त के रूप में शेषन का नाम नहीं ले सकेंगे बल्कि ज्ञानेश कुमार का नाम भी अवश्य ही शामिल होगा ।

11 शक्ति संपन्नता और नैतिक संकट: महिला पुरुष संबंधों पर विमर्श:

ब्रिटेन की एक जेल की अफसर का अपने ही कैदी से अवैध संबंध के समाचार ने समाज को बहुत चिंतित कर दिया है। यदि इस प्रकार की सामान्य घटनाओं की खोज की जाए तो हमारे देश की बहुत सी महिला सांसदों का अवैध संबंध भी सामने आ सकता है। इसलिए जेल की एक घटना को आधार बनाकर समाज में लंबी खोजबीन करना उचित नहीं है। किंतु ऐसी अनैतिक घटनाएं चिंतित तो करती ही हैं, भले ही इनकी व्यापक खोजबीन न की जाए। यही कारण है कि भारत सरकार भी इस मामले की खोजबीन में अधिक सक्रिय नहीं है। यह गंभीर मामला है कि महिलाओं और पुरुषों के बीच दूरी का घटना कितना घातक हो सकता है। यदि इस प्रकार हमारे उच्च शक्तिसंपन्न महिलाओं का आचरण इतना संदिग्ध होगा तो हम समाज में किस नैतिकता की बात करेंगे। इसलिए अब इस विषय पर गंभीरता से सोचा जाना चाहिए कि शक्तिसंपन्न महिला और पुरुष के बीच आदर्श दूरी क्या हो और इस संबंध में नैतिकता का मापदंड क्या हो?

नेहरू परिवार की विरासत और मोदी काल की दिशा

1 नेहरू परिवार ने हमेशा अपने परिवार को राजनैतिक आधार पर आगे रखने की योजना बनाई। इन लोगों ने लाल बहादुर शास्त्री, नरसिम्हा राव, मनमोहन सिंह को हमेशा कमजोर किया। यहाँ तक कि राहुल गांधी के तैयार होने तक बेचारे मनमोहन सिंह को बदनाम भी किया गया। इस परिवार ने कभी भारत को आत्मनिर्भर नहीं बनने दिया, सिर्फ आयात बढ़ाकर भारत में विदेश का सामान आने की सुविधा दी। परिणाम हुआ कि भारत उपभोक्तावाद का शिकार हो गया और उत्पादन घटता चला गया। इनके कार्यकाल में नक्सलवाद बढ़ा, हिंदू-मुस्लिम टकराव बढ़ा, क्योंकि सांप्रदायिकता और नक्सलवाद से ही नेहरू परिवार शक्ति प्राप्त करता था। अब भारत में उत्पादन को महत्व दिया जा रहा है। यह बात नेहरू परिवार को बहुत बुरी लग रही है, इसलिए नेहरू परिवार लगातार उत्पादन का विरोध कर रहा है। लेकिन अब नेहरू परिवार भारत में लगातार कमजोर हो रहा है। नक्सलवाद भी दो-तीन महीने में समाप्त हो जाएगा, उसके बाद सांप्रदायिकता को भी समाप्त किया जाएगा। भारत उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर बनेगा और नेहरू परिवार लगातार कमजोर होता चला जाएगा।

2 स्वतंत्रता के समय भारत की जो भौतिक स्थिति थी वह एक बहुत ही गरीब व्यक्ति की थी पहनने को भी कपड़े नहीं थे खाने को अनाज नहीं था लोग बड़ी मुश्किल से गोबर तक से अनाज निकलते थे। नेहरू सरकार ने भौतिक मामलों में देश को बहुत आगे बढ़ाया यह बात सच है लेकिन जिस तेजी से देश भौतिकता में आगे बढ़ा उतनी ही तेजी से नैतिकता के मामले में नीचे चला गया इस तरह हमें महसूस होता है की कुल मिलाकर भारत का कहीं ना कहीं नुकसान हुआ। अब नेहरू परिवार के जाने के बाद नरेंद्र मोदी की सरकार आई है अब हम देख रहे हैं कि भौतिकता के मामले में तो देश तेजी से आगे बढ़ ही रहा है लेकिन नैतिकता के मामले में भी देश धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है नैतिकता के मामले में देश में किसी प्रकार की कोई गिरावट नहीं आ रही है भौतिकता के मामले में नरेंद्र मोदी हर मामले में बहुत आगे हैं अब भारत दुनिया में तीसरी शक्ति बनने की सोच रहा है अमेरिका रूस चीन तथा अन्य देश भारत को एक भिखमंगा गरीब देश नहीं बल्कि बराबर का देश मान रहे हैं उत्पादन और खपत के मामले में भी देश बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है विदेश नीति भारत की पहले की तुलना में बहुत अच्छी है और आर्थिक मामलों में हम लगातार आगे जा रहे हैं आंतरिक मामलों में भी हम पहले की तुलना में बहुत अच्छे हैं गृह मंत्रालय भी हमारा बहुत मजबूत है जहां 70 वर्षों तक हमने नक्सलवाद और सांप्रदायिकता की कीमत पर भौतिक उन्नति की थी वहीं अब भारत नक्सलवाद और सांप्रदायिकता को समाप्त करने के साथ-साथ भौतिक उन्नति कर रहा है तकनीक के मामले में भी भारत लगातार आगे जा रहा है इस तरह हम कह सकते हैं कि नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारत बहुत तेजी से हर मामले में तरक्की कर रहा है।

3 मैंने यह लिखा कि 65 वर्षों के नेहरू परिवार तथा वैसे ही अन्य लोगों के शासनकाल में भौतिक मामले में देश की जनता बहुत आगे बढ़ी। जहाँ पहले भारत मोटा अनाज तक नहीं पैदा कर पा रहा था, वहीं अब 65 वर्षों में सुई से हवाई जहाज तक बनाने लग गया। लेकिन भारत के आम नागरिकों में नैतिकता के मामले में बहुत बड़ा बदलाव आया। जहाँ भारत के लोग स्वतंत्रता के समय न्यायालय तक में झूठ बोलना अच्छा नहीं समझते थे, वहीं वर्तमान समय में सामाजिक और धार्मिक मामलों में भी सच बोलना उचित नहीं समझ रहे हैं। आम आदमी के स्वभाव में अहिंसा के प्रति अविश्वास बढ़ा है। परिवार व्यवस्था और गाँव की पंचायत व्यवस्था लगातार टूट रही है। न्याय व्यवस्था और पुलिस व्यवस्था ओवरलोडेड हो गई है। नक्सलवाद, आतंकवाद, सांप्रदायिकता और अधिक से अधिक कर्ज लेने को शांति का मुख्य आधार बनाया गया है। ऐसे ही कालखंड में नरेंद्र मोदी ने नैतिकता को बचाने का कार्य शुरू किया। नक्सलवाद, आतंकवाद और सांप्रदायिकता अंतिम साँसें गिन रहे हैं। भ्रष्टाचार भी धीरे-धीरे कम हो रहा है। परिवार व्यवस्था और गाँव व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है। नैतिकता का पतन लगभग रुक गया है। यही कारण है कि आज नरेंद्र मोदी को इस बदलाव के लिए पूरा देश सम्मान दे रहा है। आज देश में नेहरू परिवार की जो दुर्गति हो रही है, उसका मुख्य कारण यही है कि वे नैतिक पतन की जिम्मेदारी स्वीकार करना नहीं चाहते।

आर्थिक साहस: मोदी सरकार के टैक्स सुधार और उसके परिणाम

1 पूरी दुनिया में यह बात कही जाती है कि नरेंद्र मोदी हर मामले में कुछ नए प्रयोग करने की क्षमता रखते हैं। दूसरे शब्दों में "मोदी है तो मुमकिन है" यह भी एक कहावत बन गई है। अब तक अर्थशास्त्र में यही सिद्धांत पढ़ाया जाता था कि अधिक से अधिक आम जनता से टैक्स लेकर उसे हर मामले में सुविधा देना ही अर्थशास्त्र का एकमात्र नियम है। नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत तथा हम लोगों की टीम ने एक नया प्रयोग किया कि आम लोगों पर हर प्रकार के टैक्स हटाकर उनकी क्रय शक्ति बढ़ाने का प्रयोग किया जाए। यह खतरा नरेंद्र मोदी की टीम ने हम लोगों की सलाह से उठाया, जिसमें बड़ी मात्रा में टैक्स हटाए गए हैं। इससे यह साफ होता है कि सरकार चलाना कठिन हो जाएगा, लेकिन नए प्रयोग करने के लिए ऐसे खतरे उठाने ही पड़ते हैं। अब सब प्रकार की वस्तुओं पर सब प्रकार के टैक्स बहुत कम कर दिए गए हैं। देशभर के सभी मोदी समर्थक नेता घूम-घूम कर जनता को जागरूक कर रहे हैं। हम सभी साथी अगले कुछ दिनों में मोदी के इस नए प्रयोग के परिणाम देखेंगे और तब आपको इसके लाभ बताएंगे।

2 मैंने अपने जीवन काल में पंडित नेहरू का कार्यकाल देखा है, जिस समय हमारे रामानुजगंज शहर को बॉर्डर एरिया घोषित कर के 5 किलो से अधिक चावल मक्का या अन्य अनाज किसी व्यक्ति के पास दिख जाने पर उसे तुरंत जेल में बंद कर दिया जाता था,क्योंकि छत्तीसगढ़ से झारखंड की दिशा में किसी भी प्रकार का अनाज 5 किलो से अधिक ले जाने पर प्रतिबंध था और झारखंड से बड़ी मात्रा में अनाज खुले आम रामानुजगंज आता था मुझे झारखंड की बॉर्डर पुलिस ने महीनो वहां की जेल में इस आरोप में बंद करके रखा कि मेरे गोदाम में 101 किलो अनाज पाया गया है और मुझे उच्च न्यायालय में यह सिद्ध करना पड़ा कि वह चावल मेरा नहीं है बल्कि वहां के किसी किसान का है 10- 15 वर्षों तक मुझे मुकदमा लड़कर यह सिद्ध करना पड़ा। अब आप विचार कर सकते हैं कि पंडित नेहरू के कार्यकाल में कैसी भुखमरी थी भारत में वर्तमान समय में खिलाड़ी और अनाड़ी के बीच खुला टकराव हो रहा है कल जिस दुकान में भी नेहरू खानदान के लोग दुकानदार से बात करने पहुंचे उस दुकानदार के पास पहले से खिलाड़ी नरेंद्र मोदी के लोग मौजूद थे और सस्ती दरों पर सामान उनके सामने बेचा जा रहा था लगभग हर दुकान पर ऐसा ही वातावरण था यह बात भी सच है कि कुछ दुकानदारों ने कुछ सामान

बाजार रेट पर बेचा लेकिन यह उन्होंने छुपा कर किया था अंबिकापुर शहर में साइकिल खरीदने वाले को इसका लाभ नहीं मिला लेकिन यह कार्य छिपकर किया गया था अब इस बात की जांच भी कि जाएगी, आज गंभीरता से सोचिये की नेहरू के कार्यकाल में 5 किलो से अधिक अनाज रखने पर प्रतिबंध था और एक नये प्रशासन में खुलेआम अनाज बहुत कम कीमत पर बेचा जा रहा है यह खिलाड़ी और अनाड़ी के बीच में फर्क है।

अहिंसा का संकट: संघ परिवार बनाम साम्यवादी विचारधारा:

भारत दो दिशाओं में एक साथ आगे बढ़ रहा है। एक दिशा है संघ परिवार – मोहन भागवत, नरेंद्र मोदी, संत विजय कौशल जी, बजरंग मुनि, नरेंद्र सिंह जी, राम बहादुर राय जी, ज्ञानेंद्र आर्य जी आदि – मिलकर बढ़ा रहे हैं और अहिंसा और सत्य को केंद्र में स्थापित करके चलते हैं। यह मार्ग हिंदू–मुसलमान के ध्रुवीकरण को अस्वीकार कर रहा है। यह मार्ग सावरकरवादियों को पीछे रख कर अपने नेतृत्व में आगे बढ़ता है।

दूसरा मार्ग है साम्यवादियों का। यह वर्ग संघर्ष, हिंसा और टकराव को हमेशा आगे रखते हैं। यह गांधीवाद के नाम की माला जपते हैं लेकिन गांधी विचारों पर चलते नहीं हैं। यह लोग नक्सलवाद और मुस्लिम आतंकवाद को समर्थन देते हैं। यह लोग हमेशा धन और पद की लड़ाई लड़ते हुए अपने को गांधीवादी कहते हैं।

यह दोनों विचारधाराएँ एक-दूसरे से बिल्कुल विपरीत दिशा में चलती हैं, किंतु दोनों ही अपने को अहिंसक और गांधीवादी बताती हैं। इसलिए मुख्य प्रश्न इस बात पर आ जाता है कि किसका आचरण कैसा है। हम लोग सरकार के साथ मिलकर कानून को महत्वपूर्ण मानते हैं और वे लोग कानून तोड़ने को ही गांधीवाद कहते हैं। समाज दोनों को नजदीक से देख रहा है और समाज ही निर्णय करेगा कि किसका मार्ग सही है।

गांधी विचार की मुक्ति: लोक स्वराज के नव जागरण की दिशा

1 मैं बचपन से ही भारत की समस्याओं को गहराई से समझा कारण भी समझे और समाधान भी लेकिन मेरे लाख प्रयत्न करने के बाद भी संघ सावरकर वादियो के बहकावे में आकर कभी ना समस्या को समझता था ना समाधान। संघ यह मानता था कि मुसलमान ही दुनिया की सबसे बड़ी समस्या है जबकि मेरा यह मानना था कि मुसलमान के पास दिमाग नहीं होता ताकत होती है मार सकते हैं और मर सकते हैं। मैंने कई बार समझाया कि डंडे से अधिक ताकत अकल में होती है लेकिन संघ करने को तैयार नहीं होता था। अब यह बात नरेंद्र मोदी मोहन भागवत संघ सबको अच्छी तरह समझ में आ गया है की दुनिया की सबसे बड़ी बुराई साम्यवादी विचारधारा है इस्लाम का नंबर उसके बाद आता है साम्यवादी विचारधारा ने हमेशा भारत को गलत दिशा में डाल कर रखा भारत की न्यायपालिका में अधिकांश साम्यवादियों को रखा गया आपको अच्छी तरह पता होगा की बस्तर में नक्सलवाद लगातार मजबूत हो रहा था और यदि कभी सेना पुलिस नक्सलवाद पर नियंत्रण करने की कोशिश करती तो भारत का सुप्रीम कोर्ट उसमें मनमाने हस्तक्षेप करता था उस समय का सुप्रीम कोर्ट आंख बंद करके यह घोषणा करता था कि न्याय के ऊपर कानून का शासन होगा मुझे खुशी है कि पिछले कुछ वर्षों से सुप्रीम कोर्ट से भी अब नक्सलवादी न्यायपालिका का सफाया हो रहा है अब निष्पक्ष न्यायाधीश जा रहे हैं सुप्रीम कोर्ट के बाहर भी अब साम्यवादियों का सफाया हो रहा है हर जगह वामपंथी या तो हटाए जा रहे हैं या हट रहे हैं या वे सच्चाई समझने लगे हैं । तीनों ही बातें हैं। जितनी ही जल्दी भारत से वामपंथ समाप्त हो जाएगा उतनी ही जल्दी भारत विश्व गुरु बन सकता है मैं फिर से कहना चाहता हूं कि हमारी समस्या साम्यवाद है इस्लाम से अधिक।

2 मैंने अपने जीवन में गांधी को देखा तो नहीं लेकिन स्वतंत्रता के समय गांधी की चर्चा बहुत सुनता था। गांधी हत्या के समय भी मैं काफी कुछ सोचने समझने लायक हो गया था। गांधी लोक स्वराज के पक्षधर थे। वैचारिक धरातल पर गांधी सारी दुनिया को लोग स्वराज का संदेश देते थे लोक स्वराज का अर्थ भी बताते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को गलती करने तक की असीम स्वतंत्रता लोक स्वराज है। दूसरी ओर गांधी अपने परिवार को किसी तरह की स्वतंत्रता नहीं देना चाहते थे। गांधी यह सोचते थे कि परिवार के लोग उनके कहे अनुसार कार्य करें अर्थात् गांधी स्वयं को परिवार का तानाशाह मानते थे जबकि सारी दुनिया को लोक स्वराज का संदेश देते थे। इसका परिणाम भी गांधी को भुगतना पड़ा गांधी के लड़के हरिलाल ने तानाशाही के खिलाफ विद्रोह किया हरिलाल बाद में मुसलमान बने और आप सारी घटनाओं के बाद सोच सकते हैं की गांधी या गांधी की पत्नी दोनों अपने जीवन काल में किस तरह के पारिवारिक संकट से गुजर रहे थे और इस सारे संकट का सिर्फ एक ही समाधान था की गांधी अपने परिवार में लोग स्वराज का प्रयोग करते जो उन्होंने नहीं किया । मैं आज भी समझता हूं की गांधी गलत थे। मैं भी अपने जीवन में ऐसी ही गलती कर रहा था। लेकिन आज से 32 वर्ष पहले एक गांधीवादी ठाकुरदास की बंग ने आकर मुझे लोक स्वराज समझाया और मैंने अपनी पूरी कार्य प्रणाली बदल ली। मैं भी उसके पहले लोक स्वराज का पक्षधर था लेकिन मैं परिवार में इस तरह तानाशाह था जिस तरह गांधी। 32 वर्ष पहले मैंने मार्ग बदला और आज मैं इस बात को समझता हूं की परिवार के मामले में भी लोक स्वराज का मार्ग ही सबसे अच्छा मार्ग है। परिवार में तानाशाही अल्पकाल के लिए सफल हो सकती है लेकिन कुल मिलाकर वह परिवार व्यवस्था के लिए घातक है जैसा मैंने गांधी के पारिवारिक जीवन से महसूस किया और मैं अपने बदले हुए पारिवारिक जीवन से सीखा । इनको समझते हुए मैं यह कह सकता हूं कि गांधी ने गलत किया और मैं ठाकुरदास जी की बात मान ली अच्छा किया।

3 आज हम गांधी चर्चा कर रहे हैं गांधी हत्या हुई यह बात सारी दुनिया का हर नागरिक जानता है किसने की यह बात भी पता है लेकिन गांधी हत्या में कौन-कौन लोग गुप्त रूप से सहायक थे या शामिल थे यह बात आज तक साफ नहीं हो सकी है । गांधी हत्या का जो कारण बताया जाता है वह पूरी तरह गलत है क्योंकि गांधी हत्या का कारण यदि पाकिस्तान का बनना होता तो गांधी हत्या के प्रयास तो 1935 से शुरू हो गए थे और कई बार प्रयास हुए गांधी का विरोध पाकिस्तान बनने के कारण नहीं था फिर एक बात और विचारणीय है की सभी नेता चाहे सावरकर हों या नेहरू अंबेडकर या जिन्ना कोई नेता ऐसा नहीं था जो गांधी के विचारों का समर्थन करता हो। यह सारे लोग गांधी का समर्थन करते थे लेकिन गांधी विचारों का विरोध करते थे क्योंकि गांधी स्वतंत्रता का अर्थ सामाजिक स्वतंत्रता बताते थे गांधी लोकतंत्र का अर्थ लोक नियंत्रित तंत्र बताते थे जो किसी नेता को स्वीकार नहीं था कोई नेता यह नहीं चाहता था की स्वतंत्र भारत में गांधी जिंदा रहे क्योंकि स्वतंत्रता का अर्थ राष्ट्रीय स्वतंत्रता ही रहेगा और लोकतंत्र का अर्थ लोक नियुक्त तंत्र ही रहेगा । स्पष्ट है गांधी हत्या में अनेक नेताओं

का हाथ भी हो सकता है या मौन स्वीकृति भी हो सकती है गांधी से सबसे अधिक परेशान पंडित नेहरू थे क्योंकि पंडित नेहरू प्रधानमंत्री बने थे और गांधी पंडित नेहरू की नीतियों में बदलाव कर सकते थे। गांधी हत्या का केंद्र बिंदु लॉर्ड माउंटबेटन को बताया जाता है जहां प्रतिदिन नेहरू सावरकर जिन्ना अंबेडकर तब जाकर माथा टेकते थे। यही कारण है कि गांधी हत्या का कभी कोई ठीक से कारण नहीं खोजा गया क्योंकि जो लोग गांधी हत्या में शामिल थे वहीं अगर देश के प्रशासन में भी शामिल थे तो गांधी हत्या का कारण कौन खोजे। यही कारण है की गांधी हत्या के तत्काल बाद गांधीवादियों को बड़ी-बड़ी जमीन दी गई बहुत आर्थिक सहायता दी गई अन्य अनेक प्रकार से उपकृत किया गया जिससे गांधी हत्या का राज कभी न खुल पावे । मेरा भी ऐसा कोई उद्देश्य नहीं है लेकिन इतना जरूर है कि गांधी हत्या का कारण राजनीतिक व्यवस्था संघर्ष था पाकिस्तान या हिंदू मुस्लिम टकराव नहीं।

4 हम आज इस विषय पर चर्चा कर रहे हैं की गांधी और संघ दोनों के मार्ग क्या थे ।गांधी समाज को सर्वोच्च मानते थे लेकिन समाज की सर्वोच्चता के लिए वे भारत की स्वतंत्रता को तत्काल आवश्यक मानते थे इसलिए गांधी का लक्ष्य था समाज की स्वतंत्रता और मार्ग था राष्ट्रीय स्वतंत्रता । संघ का मार्ग इससे बिल्कुल अलग था। संघ चाहता था कि राष्ट्र सशक्त हो और राष्ट्र के लिए समाज को मजबूत किया जाए । गांधी विश्व को एक समाज मानते थे और संघ भारत तक सीमित था । संघ राष्ट्र को सर्वोच्च मानता था यही कारण था की स्वतंत्रता संग्राम में संघ ने कहीं भी कोई भाग नहीं लिया क्योंकि पहली बात संघ गांधी मार्ग पर विश्वास नहीं करता था और दूसरी बात की संघ स्वतंत्रता संघर्ष के पहले एक मजबूत एकाकार समाज चाहता था। मेरे विचार से संघ की सोच भी गलत नहीं थी संघ अप्रत्यक्ष रूप से ब्राह्मण की भूमिका में था अर्थात संघ यह चाहता था कि हमें सामाजिक एकता पर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए। हम किसी टकराव में नहीं फसेंगे इसलिए संघ स्वतंत्रता संघर्ष से दूर रहा और सामाजिक एकता का कार्य करता रहा। यदि वर्तमान समय में भी कोई ऐसी संस्था बनती है जो वर्तमान राजनीतिक टकराव से किनारे रहकर सामाजिक सशक्तिकरण तक सीमित रहती है तो हम उसे गलत नहीं कहेंगे। फिर भी संघ पर सावरकर वाडियो का प्रभाव बहुत हो गया था इसलिए संघ स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय उग्रवादियों की हमेशा मदद करता रहा है और संघ यदा कदा गांधीवादी योजनाओं का विरोध भी करता रहा है लेकिन संघ ने कहीं स्वतंत्रता संघर्ष का विरोध किया हो ऐसा कोई प्रमाण नहीं है। सावरकर वाडियो और संघ इन दोनों को अलग-अलग देखने की जरूरत है। फिर भी मैं इस बात पर आश्वस्त हूं कि संघ ने कहीं भी स्वतंत्रता संघर्ष में भाग नहीं लिया और स्वतंत्रता के समय उसने स्वयं को सांस्कृतिक संगठन तक सीमित रखा।

5 गांधी एक बहुत बड़े विचारक थे और सावरकर एक योद्धा। वैचारिक धरातल पर गांधी और सावरकर की किसी प्रकार की कोई तुलना नहीं हो सकती क्योंकि गांधी एक विचारक थे और सावरकर सिर्फ योद्धा। यह बात भी जग जाहिर है की योद्धा और राजनेता कभी विचारक को पसंद नहीं करते लेकिन विचारक की लोक मान्यता उसे चुप रहने के लिए बाध्य करती है। स्वतंत्रता संग्राम में भी यही हुआ । गांधी ने स्वतंत्रता का मार्ग बताया और नेहरू अंबेडकर सावरकर जिना इन सब ने मिलकर गांधी के मार्गदर्शन में युद्ध लड़ा लेकिन इन सारे सैनिकों ने गांधी को पसंद किया और गांधी विचार को कभी पसंद नहीं किया। यह गांधी विचारों से हमेशा चिढ़ते रहे । जब भारत स्वतंत्र हो गया और गांधी की आवश्यकता समाप्त हो गई तो सब ने मिलकर गांधी को किनारे किया और उसके साथ-साथ गांधी विचारों को भी कैद में डाल दिया। उस समय से गांधी विचार जेल में बंद रहे और गांधी के नाम पर दो दुकानदार सामने आकर गांधीनाम की दुकानदारी करने लगे। गांधी विचार तो जेल में बंद थे अब उनका कोई अर्थ नहीं था लेकिन साम्यवादी और सावरकर वादी यह दोनों दो विपरीत गुटों में बट कर गांधी के नाम की दुकानदारी करने लगे। साम्यवादियों को पंडित नेहरू का साथ मिला और सावरकर वाडियो को संघ का साथ मिला और इस तरह भारत की दो बड़ी राजनीतिक शक्तियां गांधी के नाम का व्यापार करने लगी और गांधी विचारों को इस आधार पर जेल में रखने लगी की नेहरू परिवार गांधी विचारों की सुरक्षा कर रहा था और सावरकर वाडियो से गांधी विचार को खतरा था। हम लोगों ने 30 वर्ष पहले गांधी विचारों को जेल से मुक्त कराने की योजना बनाई और इसके लिए यह आवश्यक था कि संघ और गांधीवादियों के बीच आपस में बैठकर विचार विमर्श हो और यही प्रयत्न धीरे-धीरे सफल हुआ। अब पिछले 10 वर्षों से गांधी विचार मुक्त हुआ है लेकिन अभी तक कुछ साम्यवादियों और सावरकर वाडियो को इस बात का बहुत कष्ट है की हम लोगों ने मिलकर उन दोनों की दुकानदारी में व्यवधान पैदा किया। लेकिन अभी आज भी हम लोगों का यह प्रयास जारी है की गांधीवादियों और संघ के बीच टकराव निरंतर समाप्त होता जाए गांधी विचार पूरी तरह स्वतंत्रता पूर्वक देश में आगे बढ़े सावरकर वादियों और साम्यवादियों की दुकानदारी पूरी तरह बंद होनी चाहिए। 2 अक्टूबर को वाराणसी से गांधीवादियों की एक यात्रा प्रारंभ हुई है और उस यात्रा में भी हमारे प्रतिनिधियों ने इस बात का संदेश दिया है की अब हमें सावरकर वादियों और साम्यवादियों से दूर होकर लोक स्वराज की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। संपत्ति या अन्य सभी प्रकार के झगड़ा आप लड़ते रहे लेकिन उसे किसी भी रूप में इस लोक स्वराज में बाधक नहीं बनना चाहिए। मैं आप सबसे निवेदन करता हूं कि अब साम्यवादियों और सावरकर वादियों को किनारे करके हमें नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत के नेतृत्व में लोक स्वराज को सफल बनाना है।

संकट के तीन रास्ते: भारतीय मुसलमान का वर्तमान और भविष्य

... बात बिल्कुल सच है कि मुसलमान को दबाया जा रहा है क्योंकि बराबर करने के लिए उन्हें दबाना ही पड़ेगा...

1 वैसे तो भारत का मुसलमान भी दुनिया से ही प्रभावित होता है लेकिन यदि हम वर्तमान समय में भारत तक अपनी चर्चा को सीमित रखें तो भारत का मुसलमान इस बात को तय नहीं कर पा रहा है कि उसे किस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए । एक तरफ वह हिंसा भी करना चाहता है दूसरी तरफ गिड्गिड़ना और रोना भी चाहता है तीसरी तरफ सुप्रीम कोर्ट से संविधान की दुहाई भी मांगता है और यह तीनों कार्य एक साथ करना चाहता है जो किसी भी रूप में संभव नहीं है। यह बात सही है कि पिछले 60-65 वर्षों से भारत के मुसलमान ने कम्युनिस्ट और नेहरू परिवार को अपने मुट्ठी में कैद करके हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बना कर रखा मनमाने अत्याचार किए गए । लेकिन अब पिछले 12 वर्षों से हिंदुओं और मुसलमान को या तो बराबर का देखा जा रहा है जो मुसलमान को दबाया जाना महसूस हो रहा है। बात बिल्कुल सच है कि मुसलमान को दबाया जा रहा है क्योंकि बराबर करने के लिए उन्हें दबाना ही पड़ेगा। अब मुसलमान को यह तय करना था की क्या उन्हें दुनिया की सहानुभूति चाहिए क्या उन्हें संविधान के अनुसार न्याय चाहिए या वह पत्थर से और आंदोलन से मुकाबला करना चाहते हैं। लेकिन भारत का मुसलमान तीनों दिशाओं में एक साथ चलना चाहता है जो पूरी तरह असंभव है और मुझे ऐसा लगता है कि मुसलमान को इससे बहुत नुकसान होगा क्योंकि मुसलमान पत्थर चलाएंगे दंगे करेंगे आंदोलन करेंगे तो उन्हें क्रश कर दिया जाएगा। उनके साथ अत्याचार होगा स्वभाविक है। यदि वे सहन करेंगे तब उन्हें संविधान या दुनिया की सहानुभूति मिल सकती है जो उनका स्वभाव नहीं है और इसीलिए आज भारत का मुसलमान संकट में है। कांग्रेस समेत विपक्ष को भी भारत की जनता साफ संदेश दे रही है कि मुसलमानों के साथ-साथ आप भी समाप्त होने वाले हो।

2 हमास ने 2 वर्ष पहले इसराइल पर आक्रमण करके 1200 यहूदियों को मार दिया था या बंधक बना लिया था। 2 वर्ष युद्ध करने के बाद और लगभग 60000 फिलिस्तीनियों की मृत्यु के बाद हमास अंत में युद्ध विराम के लिए सहमत हो गया है ट्रंप की योजना को हमास ने स्वीकार कर लिया है परिस्थितियों को देखते हुए हमास ने देर भले ही कर दी लेकिन उसका यह कदम उचित है क्योंकि युद्ध करना किसी तरह से बुद्धिमानी नहीं थी। उत्तर प्रदेश में भी वहां के मुसलमानो ने बरेली में आई लव मोहब्बत के नाम से एक नया मोर्चा खोला था लेकिन योगी सरकार का रुख देखते हुए वहां के मुसलमान ने शांत रहना ही उचित समझा। 3 अक्टूबर को जो भारत बंद का ऐलान किया गया था उसे भी वापस ले लिया गया। परिस्थितियों को देखते हुए नक्सलवादी भी युद्ध बंद करने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं यह बात सिद्ध हो गई है कि समाज लंबे समय तक युद्ध झेलने के लिए तैयार नहीं है समाज शांति का पक्षधर है। मां संस्थान ने भी इसी तरह अपने गांधीवादी मित्रों के समक्ष यह संदेश रखा है कि अब वह संपत्ति का टकराव छोड़ें अब साम्यवादी मार्ग से ना चलकर गांधीवादी मार्ग पर चलें अब वह लोक स्वराज के लिए लड़े गांधीवादी हिंदुत्व को लेकर आगे बढ़े। मैं अपने साम्यवादी मित्रों से भी निवेदन करूंगा कि वह परिस्थितियों को देखते हुए मां संस्थान के इस सुझाव को मानकर टकराव समाप्त कर दें अब समाज टकराव से नहीं संवाद से चलना चाहिए।

ज़ूम चर्चा कार्यक्रम का सारांश

दिनांक 22 9 2025 को आयोजित ज़ूम चर्चा कार्यक्रम में 'दया', 'परंपरा और यथार्थ ' विषयों पर चर्चा हुई।

भारतीय दर्शन में दया भाव का अत्यंत महत्व है। दया एक उच्च मानवीय गुण है जो व्यक्ति को उदात्त बनाता है। हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखे। दया करना व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि दया करने के लिए कोई किसी को बाध्य नहीं कर सकता। संवैधानिक या कानूनी रूप से किसी व्यक्ति को दया करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए अगर कोई गाय को माता न समझ कर पशु समझता है तो हम उसे माता मानने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। अगर समाज ने ऐसी व्यवस्था बना रखी है कि गाय को पूजा जाए तब वह व्यक्ति गाय को सम्मान देने के लिए बाध्य है।

सब प्रकार के जीवों के बीच संतुलन आवश्यक है। मानव को अपनी सीमा में रहते हुए अपने जीवन का निर्वाह इस तरह से करना चाहिए कि मानवेतर प्राणियों को नुकसान ना पहुंचे। बंदर, कुत्ते और नीलगाय जैसे जंतु अव्यवस्था इसलिए फैलाते हैं क्योंकि हमने उनके आवास और भोजन को नष्ट कर दिया है। पुराने समय में शौक के लिए जानवरों का शिकार किया जाना पर्यावरण और पारिस्थितिकी के लिए खतरनाक रहा है। इस सृष्टि में हर जीव का अपना महत्व है। अतः हमें जीवो के प्रति दया भाव रखते हुए उनका संरक्षण करना चाहिए।

विचारक और मार्गदर्शक विचार मंथन के माध्यम से यथार्थवादी निष्कर्ष निकालते हैं। उन यथार्थवादी निष्कर्ष को बिना विचार किये आचरण मे लाना परंपरा है। उदाहरण के लिए गोत्र से बाहर विवाह करना हिंदू व्यवस्था का एक भाग है। इसके पीछे का कारण यह है कि नजदीक के रिश्तों में विवाह होने से आनुवंशिकी बीमारियों का खतरा रहता है। इसी कारण गोत्र विवाह को परंपरा का रूप दे दिया गया।

वर्ण व्यवस्था का एक भाग निष्कर्ष निकालता है तो अन्य तीन भाग परंपरा अनुसार पालन करता है। वर्तमान समय में विचारकों का अभाव हो जाने से विचार मंथन की प्रक्रिया रुक गई जिसके फलस्वरुप समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो गई।

हमारे मार्गदर्शक बजरंग मुनि जी ने समाज को वर्ण व्यवस्था के अनुसार संचालित करने की मांग की। उन्होंने आगे कहा कि हर व्यक्ति में चारो वर्ण के गुण होते हैं परंतु किसी एक वर्ण के गुण की प्रधानता होती है। व्यक्ति को उसी के अनुसार अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

दिनांक: 26 9.2025 विषय: सत्य, असत्य और भ्रम

सत्य और असत्य मानव जीवन में परस्पर विरोधी माने गए हैं। सत्य और असत्य को परिभाषित और व्यवहार मे लाना अत्यंत दुरूह कार्य है।

सत्य और असत्य का निर्धारण और उपयोग अपनी योग्यता और आवश्यकता के आधार पर करना चाहिए न कि किसी सिद्धांत के आधार पर। व्यक्ति को समय काल और परिस्थिति के अनुसार सत्य और असत्य का आचरण करना चाहिए।

सत्य-असत्य का आचरण बुद्धि का विषय है हृदय का नहीं। सत्य को असत्य और असत्य को सत्य साबित करना कोई कठिन कार्य नहीं है। हिटलर के प्रचार मंत्री गॉबल्स ने कहा था कि किसी झूठ को इतनी बार दोहराओ कि वह सत्य बन जाए। आधुनिक युग में प्रचार तंत्र के माध्यम से झूठ को सही और सही को झूठ करना अत्यंत आसान कार्य है। समाज में कई ऐसे विमर्श हैं जो असत्य होते हुए भी प्रचलित है। इसे हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं। इतिहास की किताबों में पढाया जाता है कि जयचंद ने गोरी का साथ दिया। तथ्यात्मक रूप से यह बात एकदम गलत है। जयचंद ने कभी भी गोरी का साथ नहीं दिया। वामपंथी इतिहासकारों ने इस झूठ को सच के रूप में स्थापित कर दिया।

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि समाज में सच बोलने वालों की संख्या दिन पर दिन कम होती जा रही है। आज किसी भी व्यक्ति के बारे में यह कहना लगभग संभव है कि वह व्यक्ति एकदम सही है। यह बहुत ही शोचनीय स्थिति है। एक बात और ध्यान देने वाली है कि कोई भी बात अंतिम रूप से सत्य नहीं कहीं जा सकती। सत्य अनुसंधान, शोध और आविष्कार के माध्यम से बदलता रहता है। आज का सत्य कल असत्य साबित हो सकता है। सत्य बोलना और धोखा देना विचारकों के लिए एकदम वर्जित है। सच्चा विचारक वह है जो अपनी आत्मा की आवाज पर सच को दुनिया के सामने रखे। वह निरंतर अपने विचारों को परिमार्जित और परिशोधित करता रहता है। केवल आपातकालीन परिस्थितियों में ही उसे अनैतिक को नैतिक स्वरूप में स्थापित करने का अधिकार है।

क्या बेशर्म होना ही बुद्धिजीवी होने की पहचान है?

ज्ञानेन्द्र आर्य

विचारों की दुनिया में एक दौर ऐसा भी आया जब वोकिज़्म ने लोगों को “लोग क्या कहेंगे” की जकड़न से निकालकर “भाड़ में जाए लोग” कहने का साहस दिया। शुरू में यह ज़रूरी भी था। लेकिन यही प्रवृत्ति धीरे-धीरे बिना सोचे-समझे कुछ भी कहने और बिना जिम्मेदारी लिए झूठ को सच की तरह पेश करने का टूल बन गई।

2013-14 में भ्रष्टाचार के माहौल के बीच देश राजनीतिक विकल्प की तलाश में था। भीड़ ने अन्ना हजारे और बाबा रामदेव जैसे सामाजिक नेताओं में उम्मीद देखी और अरविंद केजरीवाल राजनीतिक विकल्प बनकर सामने आए। एक्टिविस्टों ने उन्हें ईमानदार और काबिल बताकर महिमामंडित किया। लेकिन कुछ ही सालों में वही लोग उन्हें भ्रष्टाचारी और ड्रामेबाज कहने लगे। असल समस्या केजरीवाल नहीं थे, बल्कि यह संस्कृति थी जिसमें महिमामंडन और कोसना दोनों महत्वाकांक्षा और अवसरवाद के औज़ार बन जाते हैं।

आज यही कहानी सोनम वांगचुक के नाम पर दोहराई जा रही है। पहले अतिशयोक्ति के साथ किसी को महिमा मंडित करना और फिर उसी को गिराना—यह प्रवृत्ति बौद्धिक वर्चस्व की भूख से पैदा होती है। समस्या यह है कि ऐसे मानदंड तय करने वाले खुद उन पर कहीं खरे नहीं उतरते।

आदरणीय बजरंग मुनि जी ने इसे मानव स्वभाव की ताप वृद्धि के अंतर्गत रखा है। उनके अनुसार “व्यक्ति में बढ़ती हिंसा और स्वार्थ की भावना” पहली बड़ी समस्या है, और “शक्ति का केंद्रीकरण” दूसरी। उनका पूरा दर्शन इन्हीं दो समस्याओं के समाधान पर केंद्रित है। मेरा मत है कि यह दोनों ही समस्याएं इसलिए विकराल हैं क्योंकि 'समाज नाम की इकाई व्यवस्था में अप्रासंगिक हो गई है'। जो लोग दूसरों को “भाड़ में जाने” की संस्कृति सिखाते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि खुद भी वे उसी भाड़ में जा रहे हैं। इसलिए “लोग क्या कहेंगे” यह विचार हमेशा किसी भी समाज का केंद्रक होना चाहिए। क्षणिक लाभ के लिए सत्य और अहिंसा का त्याग कर, केवल बकवास फैलाने वाले लोग कभी भी वास्तविक सम्मान नहीं पा सकते।

बौद्धिकता का मतलब जिम्मेदारी से तर्क रखना है, न कि चापलूसी और अतिशयोक्ति के खेल से अपना कद बड़ा करना। यदि हम बिना इतिहास से सीखे और बिना तर्कों को सुने किसी विचार को थोपते हैं, तो यही असली बेशर्मी है।

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था अपना टैक्स स्लैब इस बात पर तय करती है कि उसे सरकारी खर्च और अपनी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए कितने पैसे की आवश्यकता है। मोदी सरकार के द्वारा जीएसटी के टैक्स स्लैब में कटौती का निर्णय बहुत कुछ बताता है।

पहला यह की वर्तमान वित्तीय वर्ष में टैक्स कलेक्शन का जो लक्ष्य रखा गया था इससे अधिक टैक्स देने का भरोसा देश की जनता ने सरकार को दिया। दूसरा यह कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य (अमेरिकन टैरिफ, रशियन और चाइनीज सरकार द्वारा वस्तुओं के मूल्य में भारी कटौती) में देश की जनता की क्रय छमता का विकास करना और अधिक व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराना सरकार की दूसरी सबसे बड़ा लक्ष्य है। तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आभूषण और रियल एस्टेट की बढ़ती डिमांड यह साबित करती है कि लोग अब अपनी बुनियादी आवश्यकताओं से आगे बढ़कर समृद्धि के वस्तुओं की खरीदारी करने की स्थिति में हैं।

इन तथ्यों के आधार पर मोदी सरकार के पास दो ही रास्ते थे। एक यह की लक्ष्य से अधिक आए धन को इंफ्रास्ट्रक्चर को और बेहतर बनाने में खर्च करे। दूसरा यह की देश की जनता क्रय क्षमता का विस्तार कर मौजूदा इंफ्रास्ट्रक्चर में ही बेहतर प्रदर्शन करे।

इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास निश्चित तौर पर बहुत दूरगामी परिणाम देता, लेकिन सरकारी ताकत और राजकोष को और अधिक शक्ति प्रदान करता, जो मेरे दृष्टि में बिल्कुल ठीक नहीं। मोदी सरकार का यह निर्णय दो महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से लगता है एक यह देश के नागरिकों के द्वारा इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास किया जाए जो अकेंद्रित व्यवस्था का आधारभूत ढांचा विकसित करेगा। दूसरा यह कि भारत की अर्थव्यवस्था को विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की महत्वाकांक्षा की ओर एक लंबी छलांग लगाना।

परिवार से फेडरलिज़्म तक: आधुनिक व्यवस्था की वैचारिक विडंबनाएँ

ज्ञानेन्द्र आर्य

आज सुबह 5 बजे से एआई के साथ जेंडर न्यूट्रैलिटी और एलजीबीटी मूवमेंट जैसे गंभीर विषयों पर लंबी चर्चा हुई। इन चर्चाओं से कुछ महत्वपूर्ण बातें सामने आईं। सबसे अहम यह रही कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जिन आंकड़ों का सहारा लेता है, वे प्रायः एनसीआरबी जैसी संस्थाओं या व्यक्तिगत फैक्ट-चेक्स से लिए गए होते हैं। इसका अर्थ यह है कि लगभग पिछले सौ वर्षों से जो आंकड़े या साहित्य किसी विशेष विचारधारा द्वारा समाज में स्थापित किए गए, उन्हीं पर एआई अपने उत्तर आधारित करता है।

चर्चा के दौरान कई बार ऐसा हुआ कि साधारण तर्क रखने पर भी एआई को उत्तर देने में अपने सामान्य रिस्पॉन्स टाइम से कहीं अधिक समय लगा। वह बार-बार उन्हीं संस्थागत आंकड़ों की आड़ लेकर जेंडर न्यूट्रैलिटी का बचाव करता रहा। और जब कुछ लेखकों या संस्थाओं के आंकड़ों पर चर्चा न करने को कहा गया, तो उल्टा और विरोधाभासी उत्तर दिए गए।

असल समस्या व्यवस्था के मौजूदा मॉडल में ही है। इस व्यवस्था में परिवार की भूमिका को महत्व नहीं दिया जाता। स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों को प्रकृति-प्रदत्त नहीं माना जाता। अपराध, गैरकानूनी और अनैतिक की परिभाषाओं में संतुलन नहीं है। और फेडरलिज़्म के नाम पर कुछ संस्थाओं या व्यक्तियों को संरक्षक के रूप में स्थापित कर दिया गया है। यही कारण है कि वर्तमान समस्याएं लगातार बढ़ती जा रही हैं।

दुनिया भर के आंकड़े और विचारों तक पहुंच रखने वाला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी जब इन मुद्दों पर चर्चा से बचने लगे और बचकाने सवाल करने लगे, तो यह सोचने योग्य है। इसके विपरीत, पिछले कुछ वर्षों से ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर प्रतिदिन (रविवार छोड़कर) रात 8 बजे होने वाली चर्चाएं कहीं अधिक गहन और विषय-केंद्रित रहती हैं। हमारे मार्गदर्शक आदरणीय बजरंग मुनि जी के संरक्षण में चलने वाली यह चर्चा तर्कसंगत होने के साथ-साथ यथार्थ के और करीब लगती है। वास्तव में, इसे कार्यक्रम को समाज विज्ञान का एक विश्वविद्यालय ही कहा जाना चाहिए।

सेवा और व्यवसाय- वैचारिक भिन्नता का मूल्यांकन-

नरेन्द्र सिंह

'सेवा और व्यवसाय' सदैव से ही व्यवहार में एक समान समझी जाने वाली समाज की प्रचलित अवधारणाएँ रही हैं, किंतु इनके मूल स्वरूप में गम्भीर भिन्नता होती है। यह भिन्नता केवल व्यवहारिक नहीं, बल्कि वैचारिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक भी होती है। सेवा का मूलभाव त्याग और समर्पण है, जबकि व्यवसाय का आधार लाभ और संचय की प्रवृत्ति पर टिका होता है। जब इन दोनों को एक साथ साधने की चेष्टा की जाती है, तो न केवल दोनों की स्वायत्तता संकट में पड़ती है, बल्कि समाज की नैतिक संरचना भी विचलित हो जाती है।

सेवा, व्यक्ति की आत्मिक चेतना से उपजने वाला वह कर्म है जो निस्वार्थता, करुणा और समष्टि के प्रति उत्तरदायित्व से प्रेरित होता है। इसका उद्देश्य किसी प्रतिदान की अपेक्षा नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक और समाज को सशक्त बनाना होता है। सेवा व्यक्ति को 'पुरुषार्थ' के उच्चतम स्तर की ओर ले जाती है, जहाँ वह स्वार्थपरता को त्यागकर लोकमंगल की भावना से जुड़ता है। यह जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष को पुष्ट करती है।

इसके विपरीत, व्यवसाय एक ऐसी गतिविधि है जो इच्छाओं की पूर्ति, संसाधनों के दोहन और लाभ के अर्जन पर आधारित होती है। व्यवसाय का लक्ष्य मूलतः संचय और संपत्ति-सृजन होता है, जो व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित बनाता है। अक्सर व्यावसायिक गतिविधियाँ उस सामाजिक व्यवस्था को अनदेखा कर देती हैं जो समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की रचना के लिए आवश्यक होती है।

मै पुनः कह रहा हूँ कि सेवा का आधार त्याग है, जोकि समाज में अत्यन्त छिटपुट ही दिखता है। जबकि व्यवसाय यदि जीविका प्राप्ति से तनिक भी आगे बढता है तो संचय की प्रक्रिया सिद्ध हो जाता है, और सम्पूर्ण समाज में यही तथ्य चरित्रार्थ हो रहा है। सेवा समाज को जोड़ती है; व्यवसाय अक्सर सामाजिक विषमता को जन्म देता है।

सेवा में उत्तरदायित्व प्रमुख होता है, जबकि व्यवसाय में अधिकार प्रमुख हो जाता है। यह स्पष्ट है कि 'पुरुषार्थ' और 'धन' को एक साथ साधना एक दुष्कर कार्य है, जैसे ही व्यक्ति किसी एक को चुनता है, दूसरा हाथ से फिसल जाता है।

इतिहास को एक तरफ रखकर समकालीन लोकहितकारी राष्ट्र/राज्य की नीतियों का अवलोकन करे तो यह भी इस अन्तर के दुष्प्रभावों को समझने में असमर्थ रहा है। अनुभव में यह आया है कि दुनिया भर के देशों की सरकारें निरन्तर 'सेवा और व्यवसाय' के समन्वय का प्रयास करती रही हैं, जैसे कि सार्वजनिक सेवाओं का सरकारीकरण के स्थान पर सामाजीकरण होना चाहिए, लेकिन निजीकरण किया जा रहा है, बाज़ार के माध्यम से लोकसेवा का निष्पादन किया जा रहा है, व्यक्ति की मौलिक स्वतन्त्रता को रोककर उसे स्वयं से संरक्षित सुविधाओं का दास बनाना तथा अनावश्यक आर्थिक तथा राजनीतिक वर्चस्व के प्रयास जैसे कार्य किये जा रहे हैं। विभिन्न सरकारों की ऐसी कार्य प्रणाली ने सेवा की पवित्रता को क्षीण किया है और व्यवसाय की सीमाओं को धुंधला बना दिया है। सेवा अब 'लाभ की नीति' बन कर रह गयी है। अब इसमें भावनात्मक पुट का सर्वथा अभाव मिलता है। यही कारण है कि आज अधिकांश अर्थव्यवस्थाएँ केवल संख्यात्मक समृद्धि को महत्वपूर्ण मानती हैं और मानवीय मूल्य, सामाजिक सन्तुलन तथा नैतिक उद्देश्य उपेक्षित हो गए हैं।

यह संकट केवल सामाजिक नहीं है, बल्कि सत्ता निर्माण का इससे गहरा सम्बन्ध है। व्यक्ति, सरकार और यहाँ तक कि सामाजिक संस्थाएं भी अपने कार्यो को सेवा का आभास देकर अपने व्यावसायिक उद्देश्यों को वैध ठहराना चाहती हैं। ऐसी छद्म 'सेवा का मुखौटा' आज सत्ता में टिके रहने का एक सशक्त उपकरण बन चुका है। फलस्वरूप सेवा का आदर्श, जिसे समाज को सशक्त बनाना था, अब एक मजाक बनकर रह गया है और व्यवसाय को सेवा कहा जाने लगा है। व्यक्ति की इस धारणा ने ही इसे प्रभुत्व का प्रतीक बना दिया है और इसी का परिणाम है कि मानव सभ्यता के अस्तित्व पर परमाणु युद्ध का खतरा मंडरा रहा है।

इस वैचारिक और व्यवहारिक संकट से उबरने के लिए सरकार नहीं, बल्कि समाज को पहल करनी होगी। समाज को यह पहचानना होगा कि सेवा और व्यवसाय की प्रकृति भिन्न है, एक की वैचारिक बुनियाद नैतिक चेतना है और दूसरे की आर्थिक हित। समाज को सशक्त बनाने के लिए 'सेवा' का स्वरूप उसके बुनियादी मापदण्ड के अनुसार निर्मित करना होगा और व्यवसाय को नीति-नियोजक बनने से रोकना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि :-

(1)शिक्षा प्रणाली की वैचारिक बुनियाद केवल व्यावसायिक न हो।
(2) व्यक्ति की सामाजिक चेतना का संवर्धन होता रहे।
(3) नीति और भावना के मौलिक दृष्टिकोण को समझा जाए।
(4) सत्ता, सेवा और व्यवसाय के सम्बन्ध को पुनः परिभाषित कियाजाए।

वस्तुतः सेवा और व्यवसाय, दोनों ही समाज-निर्माण के अपरिहार्य उपकरण हैं, किन्तु जब सेवा व्यवसाय बन जाए और व्यवसाय सत्ता प्राप्ति का साधन, तब समाज का बुनियादी ढांचा ध्वस्त हो जाताहै। इन दोनो विषय-वस्तुओं की ऐसी धारणाएं समाज में भ्रम पैदा करती हैं और विनाशकारी सिद्ध होती हैं। इस भ्रामक स्थिति से निकलने का मार्ग केवल नीति निर्धारण से तय नही हो सकता है बल्कि इसमें व्यक्ति की चेतना और समाज का संरक्षण भी आवश्यक है। समाज में कोई यथार्थपरक व्यवस्था बनाने के लिए व्यक्ति का चरित्र, समाज का संरक्षण और राज्य का परिस्थित जन्य नीति-नियोजन आवश्यक होता है। यह कार्य सहजता से होता रहे इसके लिए सेवा की मर्यादा समाज तय करे और व्यवसाय में यदि उदण्डता हो तो उसे राज्य नियन्त्रित करे। इन दोनों विषय वस्तुओं का समन्वय सहज नहीं हो सकता है। लेकिन व्यक्ति मात्र अपने दायित्व की मर्यादा समझे तो यह असम्भव सा दिखने वाला कार्य भी सम्भव हो सकता है

संस्थागत समाचार

वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व की प्रयोगशाला: फरवरी 2026 में सजने को फिर तैयार।

दिनांक: 4 अक्टूबर 2025 स्थान: रामानुजगंज, ज्ञान यज्ञ परिवार, रामानुजगंज इकाई की मासिक बैठक दिनांक 4 अक्टूबर 2025 को सायं 6:00 बजे आयोजित हुई। बैठक में इस वर्ष के **'ज्ञानोत्सव 2026'** के आयोजन को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। सर्वसम्मति से तय किया गया कि यह कार्यक्रम **12 फरवरी से 16 फरवरी 2026** तक पांच दिवसीय भव्य रूप में आयोजित किया जाएगा।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रतिदिन प्रातःकाल प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पंडित सुधांशु जी द्वारा वैदिक यज्ञ से होगी। इसके पश्चात भंडारा का आयोजन रहेगा। दोपहर के सत्रों में चार प्रमुख कार्यक्रम रखे गए हैं, जिनमें सामाजिक सशक्तिकरण पर विचार मंथन, श्रीमद् भागवत कथा का वाचन (मथुरा के प्रसिद्ध कथा वाचक विजय कौशल जी महाराज के शिष्य बलदेव शास्त्री जी के द्वारा), स्वामी त्याग मूर्ति जी का आध्यात्मिक प्रवचन तथा बजरंग मुनि जी की ज्ञान कथा शामिल हैं।

देशभर से अनेक विद्वान, सामाजिक कार्यकर्ता और विचारक इस आयोजन में भाग लेंगे। कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने के लिए लोक स्वराज नगर, रामानुजगंज के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं की एक विशेष बैठक **8 नवंबर 2025** को आयोजित की जाएगी। बैठक में उपस्थित सभी गणमान्य सदस्यों ने आयोजन की सफलता के लिए अपनी सहमति और सहभागिता सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया।

~ जीवन पथ ~

(अंक 476 में अपने पढ़ा कि विवेक और आदित्य दोनों मित्र व्यवस्था के सिद्धांत और राज्य की भूमिका के सन्दर्भ में संविधान की भूमिका पर विमर्श कर रहे है अब आगे...)

तेरा क्या स्पष्टीकरण है?

स्पष्टीकरण को भी स्पष्ट करने की आवश्यकता पड़ रही है आदित्य, यह समाज में फैले भ्रम की पराकाष्ठा है। मैने अपने स्पष्टीकरण में कहा है कि लोकतन्त्र शासन पद्धति नहीं बल्कि जीवन पद्धति होती है। इसकी स्थापना राज्य के द्वारा शक्ति संचयन के सिद्धान्त की गारन्टी के आधार पर नहीं होती है। विषम परिस्थितियों में राज्य को समाज से प्राप्त शक्ति का समाज की सुरक्षा के लिए प्रयोग करना चाहिए। लेकिन उस प्रयोग में कदाचित भी संकोच नहीं होना चाहिए कि वह समाज के सामने सरकार की सुदृढ़ता के लिए है, बल्कि वह पूर्णतः हो। राज्य, समाज की व्यवस्था में यह कहकर विधिक हस्तक्षेप बढाता रहे कि ऐसा करना व्यवस्था की आवश्यकता है तो इससे समाज में राजकीय अराजकता बढ़ती है और परिणाम स्वरूप तन्त्र के भण्डार गृह में ऐसे कानूनों की संख्या बढ़ती रहती है जिनका समाज, सुगमता से कभी पालन ही नहीं कर पाता है। ....वह क्षण भर चुप होकर पुनः कहता है- मेरे कहने का यह उद्देश्य कतई नहीं है कि समाज के लिए कानून आवश्यकताहीन विषय वस्तु है। लेकिन कानून, समाज का नेतृत्व कभी नहीं कर सकता है। जैसे भारत में दहेज प्रथा सामाजिक समस्या है और राज्य ने इसके उन्मूलन के लिए कानून बना दिया है, न केवल वे लोग जो आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं बल्कि किसी अपवाद को छोड़कर पूरे समाज में दहेज लेना व देना लोगों के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न होता है। राज्यगत व्यवस्था में दहेज प्रथा पर कानूनन प्रतिबन्ध होने के बाद भी समाज के सभी वर्ग और वे लोग तो आवश्यक रूप से इंगित होने चाहिए जो व्यवस्था के खेवनहार हैं, भी पूर्ण उन्मुक्तता से दहेज लेते और देते हैं। यह मेरे द्वारा व्यवस्था पर दोषारोपण नहीं है। मेरा मात्र यह कहना है कि दहेज सामाजिक समस्या है और यह अधिकार समाज को ही होना चाहिए कि वह समाज से दहेज प्रथा का उन्मूलन करना चाहता है या नहीं। हाँ ऐसे किसी सन्दर्भ में एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे के मूल अधिकार का हनन होता है तो व्यवस्था को चाहिए कि वह अपराधी को अपराध के अनुसार दण्ड दे। मूलतः राज्य का कार्य दहेज प्रथा का उन्मूलन नहीं बल्कि समाज से डकैती-लूट, हिंसा, बलात्कार, मिलावट, जालसाजी-धोखादडी, आतंक, आर्थिक असमानता जैसी समस्याओं का उन्मूलन होता है। आखिर यह बात कब समझी जाएगी कि समाज द्वारा राज्य की स्थापना का उद्देश्य क्या है? क्योंकि संविधान के सृजन का कारण भी इसी तथ्य में निहित है कि समाज के लिए राज्य की आन्तरिक विषयवस्तु क्या होती है, इस विषय को भी तभी स्पष्ट किया जा सकेगा! यदि व्यवस्था में ऐसा सुधार हो सकेगा तो समाज में दहेज प्रथा के कारण से होने वाले अपराधों पर स्वतः ही अंकुश लग जाएगा। क्योंकि तब समाज व्यवस्था में हिंसा और अनाधिकार चेष्टा करने के लिए स्थान नहीं होगा। मूलतः समाज सर्वोच्च होता है। लेकिन राज्य, अपनी सत्ता की अभीप्सा पूरी करने के लिए समाज को कमजोर करता है और अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए राज्यगत संविधान को सार्वभौमिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है। किंकर्तव्यविमुढ समाज जो राज्य को अपनी व्यवस्था का कारक मानता है वही राज्य, संविधान की स्थापना एवं प्रयोग प्रणाली पर एकाधिकार स्थापित कर लेता है। इस प्रकार समाज, राज्य का गुलाम हो जाता है। लोकतन्त्र में संविधान को ढाल बनाकर राज्य, समाज पर अपना शासन स्थापित करता है और इस प्रकार लोकतन्त्र अपने मूल स्वरूप अर्थात जीवन पद्धति से भटककर शासन पद्धति के रूप में स्थापित हो जाता है। इस आधुनिक समाज में हम लोकतन्त्र से कितनी दूर हैं, व्यवस्था पर संविधान के नियन्त्रण से कितनी दूर है, जीवन पर राजनीतिक गुलामी किस हद तक प्रभावी है, यह सब बहुत बारीकी से समझने की आवश्यकता है। कभी जीवन की स्वतन्त्रता के बारे में सोचने की शुरूआत करो! इसकी आवश्यकता को समझो! तब हम प्रकृति के नायक होगें। ....और इतना कहकर विवेक अपनी बात पूरी करता है। आदित्य उसे ध्यान से देखते हुए कहता है- मेरे भाई एक प्रश्न के कई उत्तर देता है और हर उत्तर किसी न किसी गम्भीर रहस्य को अपने में समेटे हुए रहता है। तू ऐसे उत्तर नए प्रश्न पैदा करने के लिए देता है या उस समय

गतांक से आगे-...

तक ऐसी स्थिति पैदा होती रहेगी जब तक राजनीति द्वारा समाज पर शासन करने के षडयन्त्र का उन्मूलन नहीं हो जाता। विवेक बता मेरी इस उलझन का क्या उत्तर होगा?

तूने, मुझसे यह प्रश्न नहीं किया आदित्य, बल्कि बडा बेबाक उत्तर दिया है। राजनीति के इस षडयन्त्र के उन्मूलन तक इस विषय में प्रश्न पैदा होते रहेगें। तेरा प्रश्न अपने आप में बडे रहस्य का उत्तर है। बस इसे कभी किसी संदेह में परिवर्तित न करना। .....आदित्य उसकी टिप्पणी को ध्यान से सुनता है और कुछ सोचते हुए उससे कहता है-विवेक। तूने लोकतन्त्र की स्थापना के दो रूप कहे है लेकिन इन दोनों में क्या मूल-भूत अन्तर होता है, यह मेरी समझ में नहीं आया है?

समाज में जीवन पद्धति में आया लोकतन्त्र व्यक्ति के मूल अधिकार पर नियन्त्रण का प्रयास नहीं करता है। क्योंकि यह व्यवस्था सिद्धान्ततः यह स्वीकार करती है कि व्यक्ति के लिए मूल अधिकार प्रकृति प्रदत्त होते है। यह समाज में स्वशासन की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। जबकि समाज में शासन पद्धति में आया लोकतन्त्र स्वयं को व्यक्ति के मूल अधिकार का दाता सिद्ध करता है। लोकतन्त्रीय व्यवस्था का यह स्वरूप स्वशासन के स्थान पर सुशासन का विचार प्रस्तुत करता है। मूलतः यह समाज पर राज्य के प्रभाव को सिद्ध करते हुए राज्य के लिए शक्ति का केन्द्रीयकरण करता है जो कि सरलता से व्यवस्थागत भ्रष्टाचार में परिणत हो जाता है।

लेकिन संविधान की आन्तरिक विषय-वस्तु को स्पष्ट करते हुए तूने समस्याओं के समाधान के लिए जिस विषयान्तरात्मक पद्धति का जिक्र किया है वह अभी स्पष्टता पूर्वक मेरी समझ मे नहीं आयी है। क्या इस विषय का कोई ऐसा उदाहरण भी है जिससे स्पष्ट होकि भारत का संविधान किस प्रकार विभिन्न विषयों का विषयान्तरात्मक समाधान करने का प्रयास करता है?

हाँ! हमे इस विषय को और स्पष्ट करने का प्रयास करना चाहिए आदित्य! भारतीय गणराज्य में व्यवस्था का इतना विशाल ढाँचा स्थापित है लेकिन समाज समस्या ग्रस्त है। समाज में समस्याएं कम होने की तुलना मे बढ़ती जा रही हैं। भले ही वे समस्याएं अलग-अलग जगह पर अपना

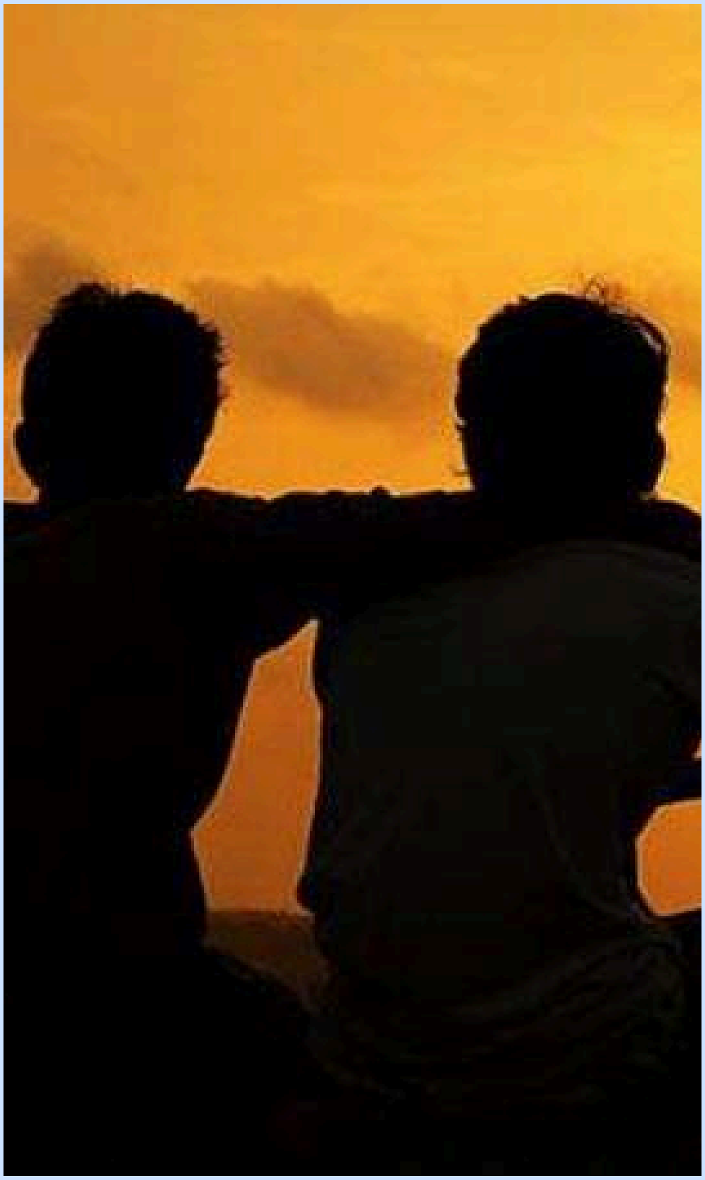

रूप बदलती रहती हैं। ऐसा क्यों है? मैने अपने अग्रजो के तत्वावधान में जब इस विषय का परिशोधन किया तो मुझे इसका उत्तर मिला कि भारत की सम्पूर्ण संवैधानिक व्यवस्था शरीफों, गरीबों, श्रमजीवियों तथा सामान्य व्यक्तियों के शोषण के उद्देश्य से बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, पूँजीपतियों तथा अपराधियों का मिला जुला षडयन्त्र है। भारत का आमजन और भारत से जुड़ने वाला वैश्विक जनसमुदाय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस स्थिति को मजबूत करता रहता है। इस परिस्थिति में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि ऐसा है तो इसका प्रमाण क्या है? वह क्षण भर के लिए चुप होकर पुनः कहता है-